प्रकाशक :
रिषभदास रांका
अध्यक्ष,
भारत जैन महामण्डल, वर्धा

पहला संस्करण ५५००

मूल्य : एक रुपया

अनुक्रमणिका

तेथें तूं माझा सांगाती '–' जहाँ जाता हूँ वहाँ तू मेरा साथी है।"
तुकाराम का अभंग गा कर मानों प्रस्थान का आरंभ कर दिया। प्रार्थ
के अंत में बोलते हुए विनोबाजी ने एक तरह से आश्रमवासियों से वि
ली। कहा कि 'आश्रमवासी और अन्य संबंधियों की परसों की बैठक
यह तय हुआ है कि १ जनवरी, १९५२ से आश्रम पैसे में से मुक्त
जायगा। आश्रमवासियों द्वारा खेती आदि में किये हुए परिश्रम और लो
से मिलने वाले श्रमदान पर ही आश्रम चलेगा। यह एक शुभ निर्णय
और यही शोभा देता है, क्योंकि बापू के बाद आश्रम यहाँ चलता है,
वह आखिरी आदर्श के अनुरूप चलाने की कोशिश हो, वरना यह
रहे, यह अच्छा है। आश्रम यहाँ न चलता हो तो भी लोगों को
स्थान से स्फूर्ति तो मिलती ही रहेगी। पैसे के दान पर आश्रम चला
भी एक तरह की सेवा होगी। लेकिन वैसे देखें तो कौन सेवा नहीं
रहा है? एक किसान भी सेवा करता है, लेकिन आज जरूरत है लो
के दिलों में क्रांति करने की। वह बिना परिश्रम के, बिना प्रचलित अ
व्यवस्था को तोड़े नहीं होगी।"

देखि रे मैंने निर्बल के बल राम'

निकलने के नियत समय के कुछ पहले तालीमी संघ का स
कुटुंब सुबह की प्रार्थना के लिए विनोबा के निवासस्थान के पास
पहुँचा। विनोबा के साथ सबने खड़े-खड़े प्रार्थना की, 'सुने री मैंने नि
के बल राम' यह भजन गाया गया। आखिर में विनोबाजी ने दो श
कहे : "आप नयी तालीम का महान् काम कर रहे हैं। आशादेवी
आर्यनायकम्‌जी ने अपने को इसमें लगा दिया है। उन दोनों का
मुझे हमेशा मिलता रहा है। आपने यहाँ आ कर प्रार्थना कर के
पैदल यात्रा के लिए मुक्त कर दिया है। अभी तक के सब सनों का अ

सच है-'निर्बल के बल राम।' मेरे जीवन का भी यही अनुभव है। हां, मैं लिखने बैठूं तो "सुने री" के बदले लिखूंगा कि 'देखि रे मैंने निर्बल के बल राम।'"

आत्मानुभूति का साक्षात्कार

सेवाग्राम से सीधे पवनार जायेंगे ऐसा अंदाज था, लेकिन विनोबा जी ने कहा, मैं बजाज-वाड़ी में किशोरलाल भाई से मिल कर वहां से पवनार आऊंगा। किसीने हिसाब किया, कुल ९ मील चलना पड़ेगा। विनोबाजी ने कहा, हररोज १०-१२ मील चलना ही है न ? आज ९ मील से शुरू कर दें। फिर वे महिलाश्रम में लड़कियों से विदा लेते हुए बजाजवाड़ी पहुंचे। किशोरलालभाई आदि से मिल कर गोपुरी हो कर पवनार करीब ११ बजे पहुंचे होंगे। पवनार के ग्रामवासी विशेष संख्या में शाम की प्रार्थना में हाजिर थे। वे विनोबाजी के दो शब्द सुनने को आये थे। आज भी हमेशा के मुताबिक विनोबाजी ने ही प्रार्थना चलायी। प्रार्थना में स्वतः गाये हुए भजनों के द्वारा मानों वे विदा ले रहे थे। ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ आदि के भजनों में से प्यारे भजनों के सिवा "हसतां रमतां प्रगट हरि देखुं रे, मारुं जीव्युं सफळ तंव लेखुं रे, नित्यानंदनो नाथ विहारी रे, ओधा जीवनदोरी अमारी रे," ये चरण खास रूप से उन्होंने गाये। कृष्ण के मथुरा-गमन के बाद गोपी-जन को सांत्वना देने के लिये उद्धव गये थे, उस प्रसंग का यह वचन है। प्रार्थना के बाद जो प्रवचन हुआ वह आगे प्रवचनों में दिया है।

'भरत राम' से विदाई

सुबह की प्रार्थना के बाद यथा-समय यात्रा आरंभ हुई। वैसे, सबसे तो पहले दिन ही विदाई ले ली गयी थी, लेकिन 'भरत-राम' से विदा लिये बिना विनोबाजी परंधाम से कैसे जा सकते थे! और यह विदाई पेटागी में थोड़े ही ली जा सकती है! विनोबाजी अपने कमरे

से निकल कर ' भरत-राम-मंदिर ' में गये । 'भरत-राम-मंदिर' परधाम में प्रवेश करते ही सामने दिखाई देता है । उसका बाहरी आकार प्रचलित मंदिर का-सा नहीं है । एक सादी-सी झोंपड़ी है और उसमें वनवास से आने के बाद रामचंद्रजी की भरत से जो भेंट हुई, उस प्रसंग को अंकित करने वाली मूर्ति रखी हुई है, जो परधाम के खेत में मिली है और जिसके लिये विनोबाजी को विशेष भाव है । विनोबाजी ने अपने हाथों उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की है । यहाँ जा कर वे भजनादि भी यथा-समय करते हैं । लोगों को इसका आश्चर्य होता है और वे विनोबाजी को पूछते हैं कि "आपके आश्रम में भी मूर्ति है और आप भी मूर्ति-पूजा करते हैं ?" तब विनोबाजी कहते कि "मूर्ति-पूजा का मैं आग्रही नहीं हूँ, लेकिन भगवान खुद होकर मेरे यहाँ आ जाय तो उसे निकाल दूँ, ऐसा अभक्त भी नहीं हूँ !" इस मूर्ति के बारे में ' भगवान् खुद होकर आ जाय, यह अक्षरशः सत्य है । इतना ही नहीं, यहाँ तो भक्त की एक पावन कल्पना पूरी करने के लिये ही वह आया है, ऐसा मुझे लगता है । करीब उन्नीस साल पहले, ८-५-३२ को धूलिया जेल में गीता के बारहवें अध्याय पर प्रवचन देते हुए सगुण और निर्गुण भक्ति समझाने के लिये अनुक्रम से लक्ष्मण और भरत का उदाहरण दे कर आखिर में विनोबाजी ने कहा है कि " ऐसा चित्र यदि कोई निकाले, जिसमें दोनों की मुखाकृति समान हो, किंचित उग्र का फरक, चेहरे पर तपस्या यहीं और राम कौनसा व भरत कौनसा यह पहचाना नहीं जा सकता, तो वह चित्र बड़ा पावन होगा । " भक्त की यह अभिलाषा पूरी करने के लिये ही मानों १९३७ के बाद जब विनोबाजी परधाम पर रहने गये और शरीर श्रम के तौर पर कुछ-न-कुछ खोदते थे, तब १९४०-४१ में एक दिन उनकी कुदाली किसी पत्थर पर टकरायी । वहाँ मूर्तियाँ निकलती हैं, यह ख्याल होने से उस पत्थर को हिफाजत से निकाला गया तो पाया गया कि औंधी रखी हुई

'भरत-राम-भेंट' की वह मूर्ति थी ! "धर्म जागो निवृत्तीचा" ('निवृत्ति का धर्म जागृत रहे') इस ज्ञानदेव के अभंग के द्वारा भरत-राम की विदा माँग कर वे निकले। रास्ते में दादा धर्माधिकारी से नयी तालीम को लेकर काफी बातें होती रहीं।

लक्ष्मीनारायण-देवस्थान (वर्धा) में वर्धावासियों से विदा लेने को ठहरना था। यह देवस्थान हिन्दुस्तान का शायद सबसे पहला भव्य मंदिर है, जो हरिजनों के लिये खोला गया था। बजाज-कुल की देशभक्ति का वह बाह्य चिह्न है। वर्धा का वह एक दर्शनीय स्थान है। योगिराज वनमाली को १९४२-४३ की चिमूर-पद-यात्रा में यहीं से विदा दी गयी थी। वह सारा प्रसंग नजर के सामने आ रहा था। महिलाश्रम की बहनों ने 'वैष्णव जन' और 'प्रेम मुदित मन से कहो राम-राम-राम' ये मधुर भजन गाये। माता जानकीदेवी बजाज ने वर्धा-वासियों की ओर से दो शब्द कहे। यहां पर विनोबाजी ने भी वर्धा-वासियों से विदा लेते समय कुछ शब्द कहे थे। उनका वह भाषण आगे प्रवचनों में दिया गया है।

और बाद में वे पवनार के लिये रवाना हुए।

इस तरह पदयात्रा का आरंभ हुई है। पदयात्रा की पावन-शक्ति से हिंदुस्तान सदियों से परिचित है। जीवन-काल के आखिरी हिस्से में हिंदु-संस्कृति ने मनुष्य से अपेक्षा रखी है 'परिव्राजकता' की। परिव्राजक याने चारों ओर घूमने वाला। गीता के 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, सब धर्मों को छोड़ कर मुझको ही शरण आ,' इस आदेश को पालन करने वाला आदेश देते हुए गीता ने मानों उसका मर्म भी बता दिया। भगवान बुद्ध और महावीर के विहार से सारे प्रांत को ही 'विहार' नाम मिला। साधु-संतों के परिभ्रमण ने खंड-प्राय हिंदुस्तान को "अखण्ड" बनाया। बापू की दांडी-यात्रा और [illegible] यात्रा का चक्र [illegible] लोगों [illegible] के सामने ही हुआ है

सर्वोदयी पद-यात्रा

आखिर में ज्ञानदेव के अद्रोह के विवरण के शब्दों में कहूँगा कि क्या अद्रोह का ही भावरूप शब्द सर्वोदय नहीं है? जिस तरह गंगा दुनिया के पाप-ताप दूर करती हुई और किनारे के वृक्षों को पोषण देती हुई समुद्र तक पहुँचती है, या दुनिया का अंधापा दूर करता हुआ और शोभा के मंदिरों को प्रकट करता हुआ सूर्य जैसे प्रदक्षिणा को निकलता है, वैसे बद्धों को छुड़ाती हुई, डूबे हुओं को और दबे हुओं को ऊपर उठाती हुई एवं आर्तों के दुःख दूर करती हुई यह सर्वोदय-पद-यात्रा संपन्न हो।

—*वल्लभस्वामी*

: १ :

संकल्प

आज यह तय हुआ है कि आगामी सर्वोदय संमेलन के लिये मुझे हैदराबाद जाना है। बहुत लोग मुझे अब तक आग्रह पूर्वक कहते रहे हैं कि मुझे संमेलन में जाना ही चाहिये। लेकिन मैंने न जाने का तय कर रखा था। न जाने के मेरे जो कारण थे वे भी बहुत महत्व के थे। उनको देखते हुए मैं जाना नहीं चाहता था। लेकिन आज मित्रों ने आग्रह किया और आग्रहवश मुझे जाने का निश्चय करना ही पड़ा।

कल सवेरे यहाँ से पवनार जाऊंगा। परसों पवनार से हैदराबाद के लिये पैदल निकलूंगा। रोज करीब पन्द्रह मील चलने का [illegible] है।

यह जब मैं जब प्रार्थना में जाहिर कर रहा हूं तो अपनी जिम्मेवारी महसूस करता हूं। वाहन में न बैठने का व्रत मैंने नहीं लिया है। क्योंकि व्रत तो सत्य-अहिंसा आदि का लिया जाता है। [illegible] की बात मैं कर रहा हूं तो उसका यह अर्थ भी नहीं है कि मुझे एकदम छोड़ देना है। पैसे के [illegible] मुझे [illegible] पड़ते हैं। उन [illegible] के अनुसार [illegible] हमें करना है। [illegible] जो इस बात को [illegible] देगा।

मित्रों से मेरी प्रार्थना है कि मेरे इस संकल्प को तोड़ने की बात वे न सोचें। संकल्प में शुरू से कुछ अपवाद भी नहीं रखना चाहिये। उससे मनुष्य की न संकल्पशक्ति बढ़ती है और न प्रतिष्ठा। पैदल यात्रा की योजना बनाने में जो मदद देना चाहें वे जरूर दे सकते हैं।

सेवाग्राम आश्रम
६-३-५१

भी परमेश्वर की इच्छा से ही प्रेरित हुआ है, अैसा मैं देख रहा हूं। क्योंकि यह सारा अनपेक्षित-सा हो गया और अिस खबर से सब को आनंद भी हुआ है।

पैदल-यात्रा क्यों?

सर्वोदय संमेलन में सब लोग जिस तरीके से जा सकते हैं उस तरीके से जाना ही अच्छा है। जो अिस तरह नहीं जा सकते हैं वे रेल्गाड़ी से आयेंगे तो भी उसमें दोष नहीं है। लेकिन हो सके तो पैदल ही जाना अच्छा है। उससे देश का दर्शन होता है। जनता के साथ सम्पर्क आता है और उसे सर्वोदय का संदेश पहुंचा सकते हैं। वह संदेश सुनने और उसमें से सान्त्वना प्राप्त करने के लिये लोग बहुत उत्सुक हैं। लोगों को इस समय सान्त्वना की सख्त जरूरत है। किसी का मन अगर त्रस्त हुआ है और उसमें से मुक्त होने का कुछ रास्ता उसे मिल जाता है तो उसको शांति मिलती है। यही हाल आज जनता का हुआ है। इसमें किसी एक का दोष है ऐसी बात नहीं है। सबका मिलकर दोष है। लेकिन दोषों की चर्चा भी किस काम की है? जरूरत है दोष-निवारण की। और उसका मार्ग सीधा सादा, सब को करने योग्य और असरकारक भी है जो हमने यहां पर ग्राम में प्रयोग किया है। यद्यपि अभी तक जैसा हम चाहते हैं वैसा रूप नहीं मिला है, फिर भी शुभ भावना से तपस्या हो रही है। और उतनी भी व्यक्ति मन को संतोष दे सकती है

यात्रा का ढांचा नहीं बनाया है

जिस प्रवास में अपनी कुछ भी कल्पना ले कर नहीं जा रहा हूं, [illegible] होगा, वह होने दूंगा। [illegible]

मदद करनी है, फलाना काम करवा लेना है, ऐसा कुछ भी मेरे मन में नहीं है। जगह जगह जो भी भले लोग मिलेंगे उनसे मिलना और लोगों की जो कठिनाइयाँ होंगी उनको हल करने का कुछ रास्ता बना सकूं तो बनाऊँ इतना ही मन में है। अब समय कम रहा है। इसलिए निश्चित रास्ते से ही जाना पड़ेगा। इधर उधर हो जाने की गुंजाइश नहीं है। वापिस आते समय ऐसी कोई पाबंदी न होने के कारण अपनी इच्छा के मुताबिक घूम सकेंगे। लेकिन आगे का विचार अभी नहीं किया है। वह हैद्राबाद पहुंचने के बाद तय होगा।

मेरा मन यहीं है

जो लोग यहां जिस काम में लगे हुए हैं उनके साथ मेरा शरीर यद्यपि नहीं दिखाई देगा तो भी मेरा मन यहीं है ऐसा अनुभव आपको आएगा। शरीर से यहां रहते हुए जितनी तीव्रता से मेरा मन यहाँ था उससे कम तीव्रता से वह नहीं रहेगा। शायद अधिक तीव्रता से ही रहेगा। मुझे उम्मीद है कि जिन नवयुवकों ने यह काम पूरा करने की शपथ ली है वे यदि यह काम ईश्वर का है जिस भावना से उसे निरहंकार पूर्वक करते रहेंगे तो उन्हें यहां की मेरी गैरहाजरी उत्साह देनेवाली ही साबित होगी।

परंधाम, पवनार
७-३-५१

पद्धति' कहा। लेकिन लोगोंने वह नाम नहीं अुठाया। 'वर्धा-शिक्षण-पद्धति' नाम चला। बापू के अनन्यभक्त जमनालालजी का नाम भी वर्धा से जुड़ा हुआ है। अितने पावन नामों का बल जब हमारे पास है, तो मेरा विश्वास है, वर्धा में बहुत कुछ काम हो सकता है। लेकिन यहां पर हमारी अितनी संस्थाअें होने पर भी वर्धा शहर में हम खास काम नहीं कर पाए हैं यह कबूल करना चाहिये। मैं अुसके कारणों में अभी नहीं जाऊंगा। संभव है अपने-अपने कामों में सभी अितने मशगूल रहे हों कि समय न निकाल सके हों।

बीच में हमने वर्धा शहर का सर्वे किया था। सैकड़ों लोगों ने अपने दस्तखत दिये और कुछ न कुछ सार्वजनिक काम करने की अिच्छा प्रकट की। यह छोटी बात नहीं है। लेकिन अुन लोगों से काम नहीं लिया गया। वैसे यहां काफी कार्यकर्ता हैं और रचनात्मक काम के लिये वातावरण भी अनुकूल है।

अनिंदावृत्ति की आवश्यकता

लेकिन जहां कार्यकर्ता अधिक होते हैं वहां अेक बात खास ध्यान में रखनी चाहिये। आज अभी वैष्णवगीत गाया गया जिसमें नरसी मेहता ने आदर्श भक्त के गुण बताए हैं। उनमें से अेक गुण की तरफ मेरा ध्यान इन दिनों विशेष रूप से जा रहा है। वह गुण है 'अनिंदा'। अेक जमाना था जब मैं कहता था कि अपने तो दोष देखने चाहिये और दूसरों के गुण। लेकिन अेक दिन सूझा कि हमें अपने भी गुण ही देखने चाहिये। क्योंकि आखिर

हम कौन हैं? वही शुद्ध चेतन आत्मस्वरूप हम हैं। तो फि दोष किसके देखें? दोषों का भान हम जरूर रखें। लेकिन चिंत तो गुणों का ही करना चाहिये। दोष तो सिर्फ गुणों की छायारु होते हैं। बिना छाया के तसवीर नहीं खींची जा सकती। वै बिना दोषों के गुण भी अव्यक्त ही रह जाते हैं। दोषों को ह जानेंगे जरूर, लेकिन उनको दूर करने के लिये। और गुणों बाहर आने का मौका देते रहेंगे। इस तरह अगर हम हर जगह गुण-दर्शन ही करते जाएंगे तो तेजी से आगे बढ़ेंगे

महिलाश्रमवालों से

यहां महिलाश्रम की जितनी लड़कियां आई हैं। आरंभ से ही उस संस्था से मेरा संबंध रहा है। आज ऊपर से ऐसा दीखता है मानो मेरा महिलाश्रम से कोई संबंध नहीं है। लेकिन दर-असल मैं अपने को महिलाश्रम के काम से अलग नहीं समझता हूं। जिस वक्त सेवाग्राम में तालिमी संघ के संमेलन में मैंने महिलाश्रम का जिक्र बुनियादी तालीम का प्रयोग करनेवाली संस्था के तौर पर किया। आपको अपना अलग अभ्यासक्रम बनाने का अधिकार है। लेकिन यह बात ध्यान में रहे कि हिंदुस्तानभर की लड़कियों को वहां से संस्कार मिलें उनके द्वारा उनमें तेज तथा वैराग्य प्रकट होना चाहिये।

लक्ष्मीनारायण मंदिर, वर्धा
सायंकाल ८-१-५१

पहला दिन—

: ४ :

देहात के मजदूरों का प्रश्न

परंधाम का हमारा काम

आपके गांव में पहले मैं कब आया था मुझे याद नहीं है। लेकिन आपके पड़ोस में ही मैं रहता हूं। यहां से तेरह मील पर पवनार में परंधाम आश्रम है। वहां मैं रहता हूं और आप सब की चिंता करता हूं। किसान कैसे बचेगा, देहात कैसे सुधरेंगे, लोगों को सुख कैसे मिलेगा, दैन्य, दारिद्र्य और दुःख कैसे मिटेगा, प्रेम कैसे रहेगा जिस विषय में मैं सोचता हूं। परंधाम में मैं और मेरे साथ पढ़े-लिखे लोग भी कुदाली से खोदते हैं, रहट हाथ से चलाकर कुएँ से पानी निकालते हैं, सूत कातते हैं, कपड़ा बुनते हैं, बढ़ई का काम करते हैं। ये सारे उद्योग कैसे पनपेंगे इसका विचार करते हैं।

मेरी पैदल यात्रा

आज मैं आपके गांव में आया हूं और यहां से घूमते घूमते तीन सौ मील पर हैदराबाद है, वहां जाऊंगा। वहां सज्जन लोगों का एक संमेलन है। वहां मैं पैदल जा रहा हूं। आप कहेंगे यह क्या पागलपन किसको सूझा? इन दिनों तो लोग हवाई जहाज से जाते हैं। कल ही एक बालक कह रहा था कि रेलगाड़ी से म[illegible]

करने में बहुत समय लगता है। अब तेजीसे पहुचाने वाले हव
जहाज निकले हैं तो ऐसे जमाने में पैदल सफर करने का प
पागलपन कैसे ! लेकिन यह पागलपन आपसे मिलने के लिये है
आप देहात की जनता नारायण स्वरूप हैं। आपसे संपर्क बढ़े, जि
ख्याल से मैं आया हूं। कल मैं रालेगांव जाऊंगा। सुबह पांच ब
चल देंगे। दोपहर को ग्यारह बजे वहां पहुचेंगे। फिर भोजन आ
होगा। कुछ लिखने का काम चलता है वह करेंगे, फिर शाम व
पांच बजे लोगों से बातचीत करेंगे। रात को प्रार्थना करेंगे, स
मिलकर भगवान का नाम लेंगे और सब को सिखायेंगे। फिर रात व
भगवान की गोद में सो जाएंगे। परसों सुबह उठ कर फिर से कू
करेंगे। ऐसा हमारा कार्यक्रम है।

देहात की चिंता देहात ही करे

आज भी यहां के लोगों से पांच बजे काफी चर्चा हुई। उन्होंने किसानों की दिक्कतों का जिक्र किया। गांव के मजदूरों को आगे शायद खाने के लिये ज्वार न मिले ऐसी हालत पैदा होने की आशंका उन्होंने प्रकट की। मैंने उनसे कहा, तुकाराम महाराज ने हमें सिखाया है कि

"तुझे आहे तुजपाशी परि तूं जागा चुकलासी"

—तेरा तेरे पास ही है, लेकिन तू जगह भूल गया है और इधर उधर भटक रहा है। तुझे लगता है कि सरकार, डी. सी. या मंत्री मेरे लिये कुछ करेंगे। लेकिन तेरे लिये तू ही करेगा। तुझे थकान आयेगी तो तू ही सोयेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं सोयेगा। तुझे भूख लगेगी तो तू ही खायेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं खायेगा। तू आप

मैं कल आपके गांव में आऊंगा। बातचीत में गांव के बड़े बड़े लोग हाजिर थे। उन्होंने प्रस्ताव किया। वह आपको बाद में सुनाया जायगा। जिस प्रस्ताव के अनुसार अगर आप लोग चलेंगे तो गांव में कोई भी भूखा नहीं रहेगा। फिर आपके गांव का उदाहरण देखकर दूसरे लोग भी असका अनुकरण करेंगे और जिस तरह देहात का यह जटिल प्रश्न हल हो सकेगा।

पांच अंगुलियों की तरह रहो

और अेक बात। हम सब हाथ की पांच अंगुलियों की तरह रहें। हमारे हाथ की एक अंगुली छोटी है तो दूसरी बड़ी है। सब अंगुलियां समान नहीं हैं। फिर भी जो काम करना होता है वह सब मिल कर ही करती हैं। लोटा उठाना हो तो अंगूठा और अंगुलियां मिलकर उठाती हैं। वे अगर आपस में झगड़ा करने लगेंगी और परस्पर सहकार नहीं करेंगी तो कुछ भी काम नहीं हो पाएगा। तो हमें भी उनकी तरह प्रेम के साथ रहना चाहिये। कोई छोटा और कोई बड़ा यह तो दुनिया में रहेगा ही। लेकिन सबके दिल एक होने चाहिये। अपनी अंगुलियों से यह सबक हम सीखेंगे तो हमारा भला होगा।

भगवान का स्मरण कीजिये

एक आखिर की बात और है। मुझे आपका अधिक समय नहीं लेना है। लेकिन मैं जो कहता हूं उसपर अमल कीजिये। [illegible] ने कहा है -- [illegible] नेकि मानवपुरुष

झाले, येर ते बोल्त चि राहिले करंटे जन"। जो भाग्यहीन होते हैं वे केवल बोलते ही रहते हैं और सुनते ही रहते हैं। लेकिन भाग्यवान वे ही होते हैं जो किसी विचार को समझने के बाद उसपर अमल करते हैं। इसलिये आप मेरी बात पर सोचें और वह जंच जाय तो उसपर अमल करें। मैं यह कहना चाहता हूं कि आप [illegible] अेक साथ बैठकर हर रोज नियमित रूपसे भगवान की प्रार्थना करें। मैंने सुना है कि यहां रोज प्रार्थना होती है। लेकिन [illegible] पन्द्रह बीस लोगों की ही होती है और उसमें ज्यादातर [illegible] ही होते हैं। ऐसा न करें। आप सब प्रार्थना में [illegible] आखिर इस मनुष्य देह में आकर क्या करना है? [illegible] अिसलिये आते हैं कि हम एक दूसरे की मदद करें, [illegible] प्रेम करें और सब मिल कर परमेश्वर का ध्यान [illegible] वाणी दी है। अिसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि [illegible] जमा हो सकते ह उतने जमा होकर परमेश्वर [illegible]

वायगांव (वर्धा)
सायंकाल
८-३-५१

दूसरा दिन—

: ५ :

जन-सेवा ही परमेश्वर की पूजा

प्रार्थना में निम्न पंक्तियाँ लोगों को गा कर समझायी गईं :

" नारायण असे विश्वी, त्याची पूजा करीत जावी
या कारणें तोषवावी, कोणी तरी काया "

—सारे विश्व में नारायण भरा है, असकी पूजा हर रोज करें। असके लिये किसी न किसी की सेवा करके असे संतोष देना चाहिये।

मेरी माँ ने बचपन में हमें अेक पहेली सुनाअी थी : " भाऊ भाऊ शेजारी भेट नाहीं संसारीं।" भाअी भाअी पड़ोस में रहते हैं लेकिन जिंदगी-भर में अेक दूसरे की मुलाकात ही नहीं होती। कौन हैं ये दो भाअी? असका जवाब है आँखें। दोनों आँखें बिलकुल अड़ोस-पड़ोस में हैं। लेकिन अेक आँख दूसरी को नहीं देख सकती। अैसा ही हाल आप का और मेरा हुआ है। मैं आप-के गाव से पचीस-तीस मील की दूरी पर ही रहता हूं। और वहां तीस साल से रहता हू। लेकिन आज तक आपकी मुलाकात नहीं हो पाई थी। भगवान ने आज वह दिन ला दिया है।

सर्वोदय संमेलन का पूर्वेतिहास

अभी सर्वोदय संमेलन हैद्राबाद में है। गांधीजी के जाने के बाद सब लोगों ने मिल कर तय किया कि सर्वोदय-समाज कायम करें। सर्वोदय-समाज याने क्या? जिस समाज में न कोई ऊंचा है न कोअी नीचा है। जिस समाज में सब अेक दूसरे पर प्रेम करते हैं उसका नाम है सर्वोदय-समाज। फिर हर साल जगह जगह मेले लगाये जायं। उन मेलों में सब लोग इकट्ठे हो कर भगवान का भजन करें, एक दूसरे से परिचय कर लें, और गांधीजी का स्मरण कर के देश के लिये अपने हाथ की कती सूत की अेक गुंडी समर्पण करें। तो अिसके अनुसार १२ फरवरी को हर प्रांत में मेले लगे। आप के प्रांत में पवनार में मेला लगा था। आप में से कुछ लोग शायद वहां पर आये होंगे लेकिन सब को आना चाहिये। और अपने साथ अेक अेक गुंडी ला कर भगवान के चरणों में समर्पण करनी चाहिये। यह अगले साल कीजिये। अिसके अलावा यह भी तय हुआ कि हिंदुस्तान भर के कार्यकर्ता सालभर में अेक दफा अिकट्ठे हो कर अगले साल के काम के बारे में सोचें।

नारायण के दर्शन के हेतु पैदल यात्रा

अिस साल सर्वोदय-समाज के सेवकों का संमेलन हैद्राबाद में होनेवाला है। वहां अगर मुझे जाना चाहिये तो मैं पैदल चलते चलते ही क्यों न जाऊं, अैसा मैंने सोचा है। अुसमें भारत के जो लोग नारायण स्वरूप हैं अुनके दर्शन मैं कर सकूंगा। नदी नदद मे

मिलने के लिये निकलती है। लेकिन जाते जाते रास्ते में कहीं
गांव को पानी दिया, कहीं अुस खेत को पानी दिया अैसा व
करते और सबकी सेवा करते करते सागर तक पहुंचती है
अुसी तरह मैंने भी सोचा कि हैदराबाद जाना है तो रास्ते
लोगों से मिलते मिलते और लोगोंकी कुछ सेवा करते करते जा
तो आज आप के गांव में आया हूं।

दुखियों की सेवा ही परमेश्वरकी पूजा है :

आप और हम सब यहां प्रार्थना में अिकट्ठे हुअे हैं। अिससे
मुझे बहुत आनंद हुआ है। आज प्रार्थना में हमने अेक बात सीखी।
सारी दुनिया में जो परमेश्वर भरा है अुसकी कुछ सेवा हमारे हाथ से
होनी चाहिये। और परमेश्वर की पूजा याने दुखियों की सेवा। तो
आप लोग हर रोज सोने के पहले अपने दिल से पूछें कि अपनी
देहके लिये तो मैंने सब कुछ किया लेकिन दूसरे के लिये क्या
किया? गांव के लिये क्या किया? कोअी बीमार था तो उसको
दवा दी है? कहीं गदगी पड़ी थी अुसको साफ किया है? मेरा देह
और मेरा घर छोड़ कर गांव के लिये मैंने अगर कुछ नहीं किया है
तो समझना चाहिये कि मेरा आज का दिन बरबाद हुआ। मैं क्यों
जिया। जिस तरह तो पशु, पक्षी सभी जीते हैं। भगवान ने इन्हें
को प्राण दिया है तो सब खाते हैं और जीते हैं। लेकिन दूसरे के
लिये जीना, दूसरे की कुछ सेवा करना अिसमें जो समाधान आनन्द को
प्रतीत होता है वह दूसरी किसी चीजमें नहीं होता। यह कल्पना
की बात नहीं है। कोअी भी अिसका अनुभव ले सकता है।

गाँव लोगों ने इकरारनामे किये, मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे उम्मीद है कि वे उसके अनुसार बरताव करेंगे।

मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखो

लेकिन एक भाई ने मुझे सावधान किया। उसने कहा "आप इकरारनामे किसी गिनती में न रखें। उसमें कोई सार नहीं है। इनका और इनका तरीका ही है कि वचन भी दे देते लेकिन उसको निभाते नहीं।" मैंने कहा "भाई, भरोसा करना मेरा धर्म है। मेरे हाथ में दंड-शक्ति नहीं है और न मैं चाहता हूँ। यहाँ आकर एक बात मैंने कही और जिनको वह जँची उन्होंने उसके अनुसार चलने का वादा किया, तो मैं उनका विश्वास ही रखूँगा। मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखना ही चाहिये। अगर न रखें तो हम मनुष्यता गँवायेंगे। आपने मुझे सावधान किया, अच्छा हुआ। उससे वे लोग भी चेत जायेंगे। वचन अगर दिया है तो "प्राण जाइ पर वचन न जाई।" लेकिन याद रखो कि मनुष्य के हृदय में परमेश्वर जागता है। कब जागेगा उसकी कल्पना नहीं कर सकते। किस निमित्त से जागेगा यह कह नहीं सकते। मैं एक फटा-टूटा आदमी आप के पास आया और ऐसा कहने की भगवान ने मुझे हिम्मत दी कि "अपने लिये तो हम जीते ही हैं, लेकिन दूसरे के लिये जीना सीखो।" तुकाराम महाराज ने यही सिखाया। "तुका म्हणे घार थोडा करी परोपकार" —थोड़ा भी क्यों न हो परोपकार करो। यह देह दूसरों के लिये घिसने दो। अगर देह ऐसी घिसेगी तो चंदन घिसने पर

जैसी सुगंध फैलती है वैसी देह घिसने पर सुगंध फैलेगी। वैसी सुगंध फैलने दो यह सिखावन हमारे सब संतों ने हमें दी और वही मैंने आज आप के सामने रखी।

मेरे मित्रो, मेरा भाषण समाप्त होता है। आपको मेरे प्रणाम हैं।

वडगांव, (जि. यवतमाळ)
९-३-५१

तीसरा दिन—

: ६ :

हाथ-चक्की और हरि-नाम

यह एक छोटासा गांव है। छोटे गांव में सब के हृदय एक होते हैं। एक दूसरे की अच्छी पहचान होती है। किसी को कुछ तकलीफ हो तो उसका जल्दी पता चलता है और आप मदद के लिये दौड़ जाते हैं। यह सब अच्छा है। फिर आप का गांव रेलगाड़ी से और मोटर से बहुत दूर है जिस से आप बड़े सुख में हैं। लेकिन आगे-पीछे मोटर यहां तक पहुंच जायगी। तब भी आप अपना सादा जीवन और प्रेम न छोड़ें।

हाथ-चक्की का महत्त्व

आपके गांव में अभी हाथ-चक्की पर पीसा जाता है। यह अच्छा है। लेकिन मोटर नजदीक आ जायगी तो आटे की चक्की निकलेगी और आप अपना आटा वहां से पिसवा लेंगे। अगर ऐसा हुआ तो आप की बड़ी हानि होगी।

मैं बचपन में कोंकण में रहता था। आप के जैसा ही वह छोटा गांव था। सुबह चार बजे घर की स्त्रियां उठती थीं और सब से पहले जो कुछ पीसने का होता था, पीस लेती थीं। बाद में झाड़ू आदि लगा कर आंगन में पानी छिड़कती थीं। और फिर

प्रेम से भगवान का नाम लेती थीं। हर गांव में इस तरह चक्की चलती थी।

देश आधा घंटा देरी से उठने लगा

लेकिन तीस साल के बाद अब देहातों में से चक्की लुप्त होती जा रही है। मैं तो देख रहा हूं कि पहले से लोग देरी से उठने लगे हैं। यानी सारे देश का प्रातःकाल का अमूल्य आधा घंटा बरबाद हो रहा है। सुबह के दो-तीन प्रहर बहुत मूल्यवान होते हैं। उस समय नामस्मरण कर सकते हैं और गहरा अभ्यास आदि कर सकते हैं। इसलिये सुबह के प्रहर में आधा घंटा देरी से उठने के कारण सारे देश का उतना नुकसान हो रहा है। तो आप लोग सुबह जल्दी उठते जाइये और रात में जल्दी सोते जाइये।

पुरुष भी चक्की चलायें

और पीसने का काम केवल स्त्रियां ही क्यों करें? बहुत स्थान तो वे पीसती हैं। लेकिन आप को भी थोड़ा पीसना चाहिये। हम जेल में पीसते थे। जेल में पुरुष पीसते हैं, यह तो सब जानते हैं। लेकिन हम परधाम के हमारे आश्रम में हर रोज पीसते हैं। पुरुष और स्त्रियां दोनों पीसती हैं। हर रोज ताजा आटा निकलता है। हाथ के पीसे आटे में जो ताकत है वह मिल के आटे में नहीं है। आजकल गांव में भी लोग चक्की … रहे हैं। लेकिन [illegible]
[illegible]

एक कविता में लिखते हैं कि लोग मंदिरों में पत्थर रखकर उसकी पूजा करते हैं; लेकिन "घर की चक्की कोई न पूजे, जा पर पीसा खाय।" जिस चक्की पर हम अपना आटा पीसते हैं और हमारी रोज की रोटी खाते हैं अुस चक्की की पूजा क्यों नहीं करते? वह भी परमेश्वर ही है। चक्की की पूजा बेल-फूल चढ़ाकर नहीं होती। उसको हर रोज साफ कर के उसमें तेल दे करके आटा पीसना यही उस चक्की की पूजा है।

व्यसन छोड़िये

इस तरह अगर हम आलस्य छोड़ेंगे, उद्योग करेंगे, तो छोटा गाँव होने पर भी हम सुखी रह सकते हैं। गांव में किसी प्रकार का व्यसन नहीं होना चाहिये। किसी को चिलम का व्यसन, किसी को बीड़ी का व्यसन, किसी को गांजा-अफीम का व्यसन, और आज कल तो चोरी से शराब का व्यसन भी शुरू हो गया है। आप हीं सोचिये कि इन चीजों का न देह को उपयोग है न आत्मा को। इन व्यसनों के कारण तो मनुष्य गुलाम बन जाता है। मनुष्य देह में हम आये हैं तो गुलाम बनने के लिये थोड़े ही आये हैं ? हम तो इस देह में मुक्ति का अभ्यास करने के लिये आये हैं। इसलिये गांव में किसी प्रकार के भी व्यसन न रहने दो।

हरि-नाम मत विसारो

यह छोटा गांव होते हुए भी करीब आधे गांव के लोग आये हैं। मैं जो बात अब कहूंगा वह ध्यान में रखो। हर रोज गांव के १५-२० लोग अेक जगह जमा हो कर प्रेम से प्रभु का भजन

करते जाइये। १५-१६ साल पहले मैं मेरे बचपन के देहात में गया था। उस गाँव में स्कूल नहीं है। न कोई खास लिखना पढ़ना भी जानता है। दो दिन ही मैं वहाँ रहा। लेकिन एक दिन रात को दो बजे मेरी नींद खुली तो मुझे भजन की आवाज सुनाई दी। शुक्रवार का रोज था। मैं बिस्तर से उठा और जहाँ भजन चल रहा था वहाँ जाकर बैठ गया। घंटा-आधा घंटा उन लोगों ने भजन गाया। मुझे बहुत आनंद हुआ। मैं सोचने लगा जिस गाँव में स्कूल नहीं है और लिखना-पढ़ना भी कोई नहीं जानता वहाँ इतना ज्ञान भी इन लोगों को किसने दिया! तुकाराम के चार अभंग ये लोग भक्तिपूर्वक गाते हैं तो उतनी अक्ल गाँव में बची है। यानी कब स्कूलें निकलती और कब इनको ज्ञान मिलता! लेकिन भजन करने की आदत देहातों को रही तो चार अच्छे शब्द इनको कंठ हो गये हैं। इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप एकत्र हो कर प्रार्थना करते जाइये। जिनको पढ़ना आता है वे कुछ अच्छी किताब पढ़ कर सुनायें। जो गाना जानते हैं वे भजन सुनायें। आज मैंने जिस तरह आपको भजन करना और ताल पर ताली बजाना सिखाया वैसे आप छोटे बड़े एक साथ भजन कीजिये। पीठ सीधी रख कर बैठना चाहिये। और थोड़ी देर मौन रह कर ईश्वर का ध्यान करना चाहिये। ऐसा आप करेंगे तो स्कूलों से बढ़ कर शिक्षण आप को इस प्रार्थना में से मिलेगा। स्कूल तो देहात में होने

ही चाहिये और अगर ध्यान न होते थे। लेकिन प्रतिपूर्वक की गई प्रार्थना में जो आनन्द और शान्ति आपको मिलेगी वह शान्ति ... की शान्ति से बढ़ कर होगी।

...मारी—सूरत
१०-३-०१

खास स्त्रियों के लिए—

: ७ :

स्त्रियों की जिम्मेवारी

स्त्रियों को भी भजन करना चाहिये

अपने लोगों में आम तौर से केवल पुरुष लोग ही भजन करते दिखाई देते हैं। लेकिन क्या स्त्रियों के लिये कोई भगवान ही नहीं है? गांव की स्त्रियों को एक जगह जमा होकर प्रेम के साथ थोड़ी देर तो भजन करना चाहिये। गृहस्थी की गाड़ी के दो पहिये हैं। एक स्त्री और दूसरा पुरुष। जैसे पुरुषों को धर्म होता है वैसे स्त्रियों को भी होता है। पुरुष को आत्मा होती है वैसे स्त्री को भी होती है। भगवान के सामने स्त्री और पुरुष समान हैं।

धर्म की रक्षा स्त्रियों ने ही की है

आप देखेंगी कि हिंदुस्तान में स्त्रियों ने ही धर्म की रक्षा अधिक की है। पुरुषों में जितने व्यक्ति व्यसनी मिलते हैं उससे बहुत कम स्त्रियों में मिलेंगे। स्त्रियों ने दुनिया में सदाचार जिंदा रखा है। इसीलिये उनके बालकों की जिम्मेवारी होती है। बच्चों में अच्छी आदतें डालना और उनको साफ-सुथरा रखना स्त्रियों के हाथ में है। आप अपने बच्चों को सच्चरित्र बनायेंगी तो देश को अच्छे नागरिक मिलेंगे। बच्चे तो आप की बड़ी इस्टेट है। इनसे बढ़ कर कौन

का धन है। कौशल्या की कोख में से भगवान रामचन्द्रजी निकले और देवकी की कोख से भगवान श्रीकृष्ण। जितने भी सत्पुरुष हुए हैं उनकी माताएँ धर्मपरायण थीं। जिस घर की स्त्रियाँ भगवान का स्मरण करती हैं, सत्य का पालन करती हैं, प्रेमभाव से रहती हैं उस घर में अच्छे पुरुष पैदा होते हैं यह बात दुनियाभर में प्रसिद्ध है। इसलिये आपके हाथ में बड़ी शक्ति है यह बात ध्यान में रखिये।

पुरुष को सन्मार्ग पर लाना भी स्त्रियों का काम है

पुरुष झगड़ा करते हैं, शराब पीते हैं, लेकिन उनकी स्त्रियाँ चुपचाप सहन कर लेती हैं। उनका काम है कि वे अपने पतिसे इन आदतों को छोड़ देने को कहें। और अगर उनका कहना पुरुष न माने तो कहना चाहिये कि जब तक ऐसी आदत आप नहीं छोड़ेंगे तब तक हम भोजन नहीं करेंगी। यह सारा काम स्त्रियों का है।

आज सब बहनें प्रेम से यहां आयीं मुझे बहुत अच्छा लगा। आप अपने पुरुषों को अच्छे रास्ते पर रखिये, बच्चों को सदाचारी बनाइये और एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार कीजिये। यह सब आप करेंगी तो आपके गांव में स्वर्ग उतरेगा। *

[illegible]—कृष्णपुर
१०-६-०१

* [illegible] 'जनवाणी' [illegible]

चौथा दिन—

: ८ :

श्रम और प्रेम से स्वराज्य का उदय

भगवान की देन

हम जो देहात के लोग हैं उनके पास धन संपत्ति नहीं है, लेकिन कुछ और चीज है या नहीं? क्या भगवान ने हम को बिल्कुल खाली ही रख छोड़ा है? पटाके में बारूद भरी होती है इसलिये उसको बत्ती लगाते ही धमाका होता है। लेकिन बारूद न होती तो कैसे आवाज आ सकती थी? तो देहात के लोगों में भगवान ने कुछ मसाला भरा है या नहीं? मेरा कहना है कि भगवान ने हमें दो अहम चीजें दी हैं काम करने के लिये दो हाथ, और हृदय में प्रेम।

हिम्मत रखनी चाहिए

अपने हाथ की ताकत से हम गंदगी साफ कर सकते हैं। आप देखते हैं कि घर घर में देवियाँ हैं इसलिये घरों के आंगन साफ रहते हैं। तो भगवान ने दो हाथों से काम करने की शक्ति हमें दी। और दूसरी चीज दी है प्रेम। तो देहात के लोगों के पास कुछ नहीं है, वे दीन हैं, दरिद्र हैं, दुर्बल हैं, लाचार हैं ऐसी अभद्र वाणी मुंह से मत निकालो। बल्कि यूं कहो कि हम भगवान के बड़े लाड़ले हैं। उसने हमें प्रेम दिया और काम करने के लिये हाथ दिये। कोई भी बाप अपने लड़के को कुछ न कुछ दिये बिना नहीं रहता। परमेश्वर हमारा पिता है, उसकी हम पर प्रीति है और उसने हमें बहुत बड़ी देन दी है। हम श्रीमान हैं। दुनिया के सामने हाथ फैलाने की हमें क्या जरूरत है। इस तरह हिम्मत रखनी चाहिये।

बिना श्रम के खाना पाप समझें

वैसे देहात के लोग काम तो करते हैं। वे खेती करते हैं। लेकिन प्रेम और अभिमान के साथ नहीं करते। लाचारी से करते हैं। लगना यू चाहिये कि बिना श्रम किये खाना पाप है इसलिये मैं श्रम करके ही जीऊंगा। अब देखिये आप सब लोगों के बदन पर कपड़ा है। लेकिन यह सारा आप खरीद कर लाते हैं। कपास आप के खेत में पैदा होती है वह आप बेच डालेंगे और बिनौले मोल लेते हैं, कपड़ा मोल लेते हैं। तिलहन आप के खेत में होती है, उसको आप बेचेंगे और खली और तेल मोल लेंगे। यह क्या चल रहा है ! अगर देहात इस तरह आलसी बने तो वे कभी सुखी नहीं बन सकते। हमें भगवान ने पैसा नहीं दिया है लेकिन हाथों की ताकत दी है उसका उपयोग करना चाहिये।

आपसी अनबन

दूसरी बात प्रेम की। देहात छोटे से छोटा भी क्यों न हो लेकिन वहां पर तीन गुट, चार पार्टियां, और पांच पक्ष होते हैं। इसका उसके साथ बनता नहीं और उसका इसके साथ बनता नहीं। मैं एक देहात में गया था। रात के करीब नौ बजे मैंने आग लगी हुई देखी। मैंने पूछा "यह आग कैसे लगी?" तो लोगों ने कहा, "लगी नहीं, बल्कि लगाई गई है।" उस गांव में धनिये का बड़ा व्यापार चलता था। दो आदमियों का झगड़ा था तो एक ने दूसरे के धनिये को आग लगा दी। मुझे यह भी कहा गया कि यह बात आज की नहीं, बल्कि हमेशा चलती है।

स्वराज्य का उदय श्रम से ही होगा

इस तरह हम न हाथों से काम करते हैं और न एक दूसरे से प्रेम करते हैं। तो फिर स्वराज्य की नरमी कैसे महसूस

होगी। आप किसी भी देहात में चले जाइये। आप को पाँच पचास आदमी बेकार बैठे हुए दिखाई देंगे। अगर आपको सभा करनी है तो किसी भी समय पचास लोग सभा के लिये आप को मिल ही जायंगे। स्वराज्य आया कहते हैं। लेकिन वह है कहाँ? कपड़ा बाहर से खरीदते हैं, तेल, खल्ली, गुड़ बाहर से खरीदते हैं। इतना ही नहीं रस्सियाँ भी आप बाहर से मोल लेते हैं। तो फिर स्वराज्य काहेका? एक आदमी को प्यास लगी थी। अब पानी कहाँ से मिलेगा? उस से कहा गया कि पानी चालीस मील की दूरी पर पैनगंगा नदी में है। वह दुखी हुआ। एक दूसरा आदमी था जो पैनगंगा नदी से एक मील के फासले पर था। वह भी प्यासा था। चालीस मील दूर रहने वाले आदमी ने उसने कहा "अरे तू क्यों दुखी होता है। पानी तो तेरे नजदीक पड़ा है।" उसने जवाब दिया, "अरे भाई नजदीक हुआ तो क्या हुआ। पानी गले में उतरेगा तभी न प्यास बुझेगी।" इसी तरह स्वराज्य लन्दन से दिल्ली आ गया, और दिल्ली से नागपुर या यवतमाल भी आ गया। लेकिन वह तुम्हारे क्या काम का। सूर्य जब तक आप के गाँव में नहीं ऊगेगा, तब तक आप सूर्योदय हुआ देखना मानने को तैयार नहीं होंगे। स्वराज्य हमारे हाथ में है। हम और आप काम करने लग जायेंगे तभी स्वराज्य का उदय होगा।

देशा, जि० यवतमाल
ता० ११-३-[illegible]

पाँचवाँ दिन—

: १ :

स्वराज्य-लक्ष्मी का आवाहन

की आबादी करीब दस हजार की है। इन सब को कपड़ा लगता है। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सब कपड़ा पहनते हैं; लेकिन सारा कपड़ा ये लोग मिल का ही खरीदते हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि जिन मिलों में इतनी पूँजी और इतनी अक्ल खर्च हो रही है, वे हिंदुस्तान को कितना कम कपड़ा देती हैं। इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। पिछली लड़ाई के पहले हिंदुस्तान की मिलों में फी आदमी १७ गज़ कपड़ा तैयार होता था, अब लड़ाई के बाद याने दस साल बीत जाने पर फी आदमी १२ गज कपड़ा तैयार होता है। और इस साल कहा गया है कि हड़ताल आदि कारणों से कपड़ा और भी कम मिलेगा, करीब ११ गज़। १७ से १२ और १२ से ११। यह है मिलों का बारह साल का पराक्रम!

लोग दलील करते हैं, अब स्वराज्य आगया है तो मिलों को पूरा कपड़ा देना ही चाहिये। मैं बहस में नहीं उतरता। मैं पूछता हूं क्या आज मिलें पूरा कपड़ा दे सकती हैं? मामूली धोती जोड़ा भी काले बाज़ार में आज १५) २०) रुपये में मिलता है। काला बाजार क्यों होता है? कपड़ा थोड़ा है। श्रीमान लोग चाहे जितना दाम देने को तैयार होते हैं। इस लिये कपड़े की कीमत बढ़ती है और गरीब लोगों को पूरा कपड़ा नहीं मिलता।'

इस हालत में लोग अगर खुद कातने लग जाँय और रोज का एक घंटा भी दें तो साल भर में फी आदमी १५ गज कपड़ा तैयार होगा। मैं कहता हूं आधा घंटा भी वे दें तो साढ़े सात गज

कपड़ा तैयार होगा। मिलों में बारह गज़ होता है उसमें यह साढ़े सात गज़ और बढ़ेगा तो देश को अधिक कपड़ा मिलेगा या नहीं? लेकिन यह सब बिना किये कैसे होगा? मैं विवाद में नहीं पड़ता। मिलों के जरिये अगर कपड़े का सवाल हल हो सकता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता तब तक आप घर में सूत कातेंगे तो देश की संपत्ति में वृद्धि होगी या नहीं?

संकल्प की ज़रूरत

आपके एक गाँव ने अपना कपड़ा तैयार करने का संकल्प अगर किया तो बहुत बड़ा काम होगा। जो बात कपड़े पर लागू है वही दूसरी चीजों पर भी है। मैं उम्मीद करता हूं कि जिन लोगों ने यहाँ कताई मंडल कायम किया है वे हारेंगे नहीं। खुद कातते रहेंगे, अपने मित्रों को सिखायेंगे, और इस तरह अपना मंडल बढ़ाते जायेंगे।

लोग कहते हैं, इस ज़माने में अगर हम चरखे पर सूत कातेंगे तो पुराने ज़माने में चले जाते हैं। [illegible] इतने पहुंचे, पुराना ज़माना और नया ज़माना इन शब्दों में क्या पड़े हैं? आज आपको अनाज चाहिये। [illegible]

[illegible]

मज़दूर गाँव छोड़कर शहर में चले गये हैं। लेकिन वहाँ भी उन
क्या उद्योग मिलने वाला है? देश में जब तक उद्योग नहीं है
हैं तब तक लोगों को मजदूरी कैसे मिलेगी? स्वराज्य मिले
भी हम अगर आलसी रहें तो हमारा स्वराज्य भी सुस्त ही रहे
हम उद्योगी बनेंगे तभी स्वराज्य में लक्ष्मी रहेगी। लक्ष्मी का ऐ
बाना है कि वह उद्योगी पुरुष के घर में ही रहेगी। स्वराज्य आ
है इसका अर्थ इतना ही है कि हमारी रुकावटें दूर हो गयी है
और काम करने की उमंग बढ़ी है। लेकिन एक बात साफ है कि
देश का हरेक मनुष्य जब तक उत्पादन में हाथ नहीं बटायेगा त
तक हमारे देश को सुख के दिन नसीब नहीं होंगे।

पादरकवडा, (जि० यवतमाळ)
१२-३-५१

तो काशी में भी गंगाजी हैं, विश्वनाथजी हैं। लेकिन उनके बावजूद काशीवाले की इच्छा होती है कि जिंदगी-भरमें कभी रामेश्वर हो आऊँ तो अच्छा है, और गंगाजी का पानी रामेश्वर के मस्तक पर चढ़ाऊँगा तो धन्य होऊँगा। तो इधर रामेश्वरवाले को क्या कहा है? उनको शास्त्रकारों ने सिखाया कि समुद्र का पानी उठा लो और काशी ले जा कर विश्वनाथजी के मस्तक पर चढ़ाओ। इस तरह काशीवाले को रामेश्वर की प्रेरणा और रामेश्वरवाले को काशी की प्रेरणा। दोनों के बीच पन्द्रह सौ मील का अन्तर। रेलवे तो उन दिनों थी नहीं। तो पैदल-यात्रा की ऐसी प्रेरणा हमारे पूर्वजों ने दी है, और हजारों लोग जिंदगी-भरमें प्रायः पैदल जाने की इच्छा रखते थे। उसमें लोगों के दिल एक-दूसरे से एकरूप हो जाते थे। यह एक ऐसा तरीका उन्होंने निकाला कि सारा भारतवर्ष एक बन गया।

पैदल-यात्रा में पारमार्थिक वृत्ति

आज हम देखते हैं कि इतने साधन बढ़ जाने पर भी देश में स्वार्थपरता बढ़ रही है, दोनों प्रान्तों में झगड़ा बढ़ रहा है। यह सब किस लिये हो रहा है? इसीलिए हो रहा है कि लोग ज्यादा स्वार्थी बने हैं। वे दूर दूर जाते हैं तो स्वार्थ के लिये जाते हैं। कोई कहीं जाता है तो [illegible] जाता है। लेकिन [illegible]

और एक दूसरे की परवाह भी नहीं। रेल की मुसाफिरी तो बहुत बढ़ी है लेकिन उसके पीछे स्वार्थ है। अब पैदल अगर कोई मुसाफिरी के लिये निकलेगा तो क्या स्वार्थ ले कर जायगा। यहां तो काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। और दिन भी बहुत जायेंगे। अगर पारमार्थिक बुद्धि है तो ही यह काम किया जायगा। और पारमार्थिक बुद्धि से होनेवाले लाभ स्वार्थी बुद्धि से कभी नहीं मिल सकते। कोई अगर विमान में बैठ कर काशी या रामेश्वर पहुंच जाय तो यात्रा का जो फल है, उससे चित्त-शुद्धि की, देशनिरीक्षण की और जनता से एकरूप होने की अपेक्षा कभी नहीं पूरी हो सकेगी। इसलिए हमने सोचा कि हम अपने देशवासियों से मिलते-जुलते, उनसे बातचीत करते करते सर्वोदय संमेलन के लिये जायेंगे।

नाम अच्छे हैं लेकिन काम अच्छे चाहिये

आप पूछेंगे भला यह सर्वोदय क्या चीज है? अच्छे अच्छे नाम तो आज कल बहुत चल पड़े हैं। कोई अपने को समाजवादी कहते हैं। वे कहते हैं कि सारा समाज एक है और हम सारे समाज के सेवक हो जायेंगे। अपना अलग कोई व्यक्तित्व नहीं रखेंगे। निजी स्वार्थ जैसी कोई चीज नहीं। सारा समाज को समर्पण। इसका नाम है समाजवाद। कोई कहते हैं कि हम साम्यवादी हैं। सब के साथ समान व्यवहार होना चाहिये, न कोई ऊंच और न कोई [illegible] होना चाहिये [illegible] कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिये

[illegible]

है । साम्यवाद शब्द भी अच्छा है, समाजवाद शब्द भी अच्छा है। अब यह नया शब्द निकला "सर्वोदय"। यह भी अच्छा है। अच्छे शब्द तो बहुत निकले हैं लेकिन हमें काम अच्छे करने चाहिये तभी ये शब्द काम देंगे। नहीं तो वे हवा में रह जायेंगे। हमें तो इनको जमीन पर लाना है। सर्वोदय का मतलब है 'हरेक का भला।' याने एक का स्वार्थ दूसरे के स्वार्थ के विरोध में, या दूसरे की परवाह किये बगैर अपना स्वार्थ साधना यह बात नहीं होनी चाहिये। हम सब एक हैं और हम सब का उदय। यह है सर्वोदय का अर्थ। तो सर्वोदय में सब से जो पिछड़े हुए होते हैं उनकी फिक्र करना पड़ता है। इसीलिये हमने सोचा है कि हम छोटे-छोटे गाँव में पहुचें और हो सके तो वहां मुकाम करें।

भारत की सभ्यता देहातों में ही

आखिर यह हिंदुस्तान है कहां ! हिंदुस्तान का प्रेम, भारत-माता का अभिमान, देशभक्ति आदि बातें हम सुनते हैं। लेकिन देशभक्ति याने क्या देश की जो मिट्टी होती है उसकी भक्ति ? वह तो जो हमारे देश में है वैसी दूसरे देशों में भी पड़ी है। भारतमाता की भक्ति का यही मतलब है कि अपने जो लाखों भाई देहातों में पड़े हैं उनकी भक्ति, उनकी सेवा, उनपर प्रेम। इन छोटे देहातों के इतिहास कौन लिखेगा ? बड़े शहरों के तो इतिहास लिखे जा चुके हैं। रोम एक बड़ी भारी नगरी हो गई। उसका इतिहास सुनो। लेकिन छोटे गांवों का इतिहास जब कोई लिखने बैठेगा तब उसको पता [illegible] कि ये गांव इतिहास लिखने में तो [illegible] लेकिन [illegible] भगवान

काल से चले आ रहे हैं। ये देहात ही हिंदुस्तान की रूह हैं, असलियत हैं, आत्मा हैं। हिंदुस्तान की जो संस्कृति और सभ्यता है वह देहातों में देखने को मिलती है। आज भी हमारी पुरानी सभ्यता जितनी हम देहात में पाते हैं उतनी बड़े शहरों में नहीं पाते। एक मिसाल देता हूं। कल हमारी सभा एक शहर में हुई और आज की सभा देहात में हो रही है। कल की सभा में तो बड़ा शोर ही शोर मचा था। आज यहां भी छोटे बच्चे हैं लेकिन सारे शांति से सुन रहे हैं। ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यही है कि प्राचीन काल से हमारी जो सभ्यता चली आ रही है उसका अंश देहातों में मौजूद है। देहातों में आप देखेंगे कि यहां के लोग बहुत दीन बन गये हैं, खाने को भी उनको पूरा नहीं मिलता। लेकिन साथ साथ यह भी देखेंगे कि किसी के घर पर अगर भूखा आदमी पहुंच जाय तो किसी-न-किसी तरह उसको खिला ही देते हैं। उसका आदर करते हैं। गरीब से गरीब के घर में भी अतिथि का सत्कार पहले से आज तक होता आया है। इसका अर्थ यही है कि भारत की संस्कृति और भारत की आत्मा देहात में है। देहातों के काम करने के औजार भी करीब करीब पुराने जमाने के ही हैं। पुराने जमाने का ऋषि अगर आज देहात में आ जाय तो देहातियों की [illegible] [illegible] लेकिन उसके [illegible]

[illegible]

[illegible]

खेती से किसानों का कारोबार नहीं चलेगा। खेती के साथ गोसेवा का काम, कपड़ा बनाने का काम, कोल्हू चलाने का काम, गुड़ बनाने का काम, मकान बनाने का काम, यह सारा देहात में बनना चाहिये। ऐसा होगा तभी देहात ताजा-तवाना होंगे और दुनिया के सामने हिंदुस्तान हिम्मत के साथ खड़ा रहेगा।

देशकी की रक्षा देहाती ही कर सकेंगे

देहात अगर क्षीण होते गये तो अपने देश की रक्षा सिर्फ शहरवालों के भरोसे नहीं हो सकेगी। देश के लिये मर मिटने का प्रश्न आयेगा तब देहात के लोग ही मरने के लिये तैयार होंगे। क्योंकि अपने वतन का, खेती का अभिमान और उसकी रक्षा करने की तीव्र वासना देहात को ही हो सकती है। क्योंकि देहातवाले जमीन से चिपके हुए हैं। हिंदुस्तान जैसा देश अपनी रक्षा के लिये अगर सिर्फ शहरवालों पर निर्भर रहा तो खतरे में रहेगा। इसकी रक्षा तो देहातियों से ही होगी, इसलिये सर्वोदय वालों ने यह संकल्प किया है कि हम देहातियों की सेवा करेंगे। और यही आप को कहने के लिये मैं आपके सामने उपस्थित हुआ हूं। भाइयो, सर्वोदय का विचार देहातियों की दृष्टि से थोड़े में मैंने आपके सामने रख दिया है

[illegible]

सातवाँ दिन—

:११:

आत्म-जाग्रति से ही दुख मिटेगा

हरिनामसंकीर्तन का कार्यक्रम

आप लोग शायद जानते हैं कि हम लोग पैदल निकल पड़े हैं और हैदराबाद में सर्वोदय समेलन के लिये जा रहे हैं। जब मैंने पैदल चलने का सोचा तो एक भाई ने पूछा, "एक दिन के काम के लिये आप एक महीना लगा रहे हैं तो इस बीच आपका क्या कार्यक्रम रहेगा।" मैंने जवाब दिया, "मेरा कार्यक्रम तो यही रहेगा कि मैं हरिनाम लूं और सब को लेना सिखाऊं।" यह जवाब मैंने इसलिये दिया कि मैं अपने में सिवा राम-नाम लेने के और कोई ऐसी ताकत नहीं देखता हूं कि जिससे आपका काम बन सके।

अनेक धर्म, अनेक उपासनायें

आज हमारे देश के सामने बहुत बड़ी समस्यायें हैं। यह आश्चर्य की बात भी नहीं है। हमारा देश बहुत बड़ा है। फिर हमारी आजादी को भी अभी कितने साल हुए हैं? जिम्मेवारी [illegible] पानी में [illegible]
[illegible] और किसी मानवी
[illegible]

आखिर हरिनाम का क्या मतलब है ? जो हरिनाम लेगा वह और कोई नाम नहीं ले सकता । हमारे संतों ने हमें सिखाया है कि भाई, परमेश्वर की उपासना और पैसे की उपासना दोनों बातें साथ नहीं चल सकतीं । यदि आप अपने मन में परमेश्वर को स्थान देते हैं तो फिर दूसरी किसी चीज को आपके मन में स्थान नहीं हो सकता । हमारे यहां कई प्रकार के भेद पड़े हैं । इन्होंने हमारा रास्ता रोक रखा है । अगर ये मिटते हैं तो हमारा रास्ता साफ हो जाता है, और देश एक हो जाता है । हमारे देश में धर्म अनेक हैं यह बात दुख की नहीं है बल्कि सौभाग्य की है । जहां अनेक धर्मों की सम्मिलित उपासना होती है वहां धर्मों की यह विविधता देश के विकास में मददगार ही होती है । हिंदुस्तान के विकास में यहां के विविध धर्मों ने काफी मदद पहुंचाई है । भिन्न भिन्न धर्मों के जरिये एक परमेश्वर का नाम हम लें तो हजारों भेद मिट सकते हैं।

हरिनाम में भेद मिटाने की शक्ति

एक दूसरे की भाषाओं का हमें अध्ययन करना चाहिये । हमारे विविध साहित्यों में अनेक सूक्तियां भरी हैं । लेकिन यहां तो एक दूसरे की भाषा का भी द्वेष शुरू हुआ है । कोई भी साहित्य द्वेष पर नहीं टिक सकता । इसी तरह प्रांत-भेद, प्रदेश-भेद, पक्ष-भेद भी हम में हैं । हिंदुस्तान में दुख तो सब तरफ पड़ा है । हमें जरूरत है सिर्फ सेवा में लग जाने की । पक्ष भेद आदि से सुरक्षित रहने की तरकीब अगर कोई है तो वह भगवान का नाम ही है । मैं लोगों को यह सुनाऊंगा कि हम सारे भगवान के ... किये हैं, वे

दिये हैं, जिससे कि वह कर्मयोग साध सके। स्वर्ग में देवता सुख ही सुख भोगते हैं, तो पृथ्वी पर जानवर दुख ही दुख भोगता है। जहां केवल भोग ही भोगना है वहां योग कैसे सधेगा? मनुष्य योनि में कर्मयोग की साधना हो सकती है इसीलिये देव योनि और पशु योनि से मानव योनि श्रेष्ठ समझी गयी है। तो भगवान ने हमें दो हाथ दिये यह उनकी बहुत बड़ी देन है। उनका हम उपयोग करेंगे तभी हमारे दुख मिटेंगे।

स्वराज्य के सही माने क्या हैं :

लोग कहते हैं स्वराज्य आ गया। क्या किसी पार्सल से आया है? स्वराज्य तो अपना निज का होता है। अपनी कमाई का होता है। स्वराज्य आया इसका अर्थ इतना ही है कि उजाला हो गया। अब काम करने में सहूलियत हो गई। लेकिन हम अगर काम ही न करें तो सिर्फ उजाले से क्या होनेवाला है? स्वराज्य नहीं था तब हम जिम्मेवारी अधिक महसूस करते थे। अब सभी कहने लगे हैं कि सब कुछ सरकार को ही करना चाहिये। मैं पूछता हूं कि सरकार आप से भिन्न है क्या? आप जिसे चाहते हैं उनको वोट दे कर चुन लेते हैं। आप अगर मजबूत बनेंगे तो आप-की सरकार मजबूत बनेगी। और आप दुर्बल रहे तो आप की सरकार भी दुर्बल ही रहेगी।

लोग कहते हैं कि [illegible]

ऐसा ही है। एक बीमारी के लिये दवा देते हैं, वह बीमारी अच्छी हुई ऐसा लगता है इतने में दूसरी बीमारी शुरू होती है। हिंसा में ऐसा ही होता है। रजाकारों से हमको किसने छुड़ाया। पुलिस ने और हथियारों ने। उससे हम तो पराधीन हो गये। जीवन में कुछ परिवर्तन ही नहीं आया। इस तरह से जीवन सुखी नहीं होता।

सर्वोदय के कार्यक्रम में रस क्यों नहीं?

लोग कहते हैं कि सर्वोदय के कार्यक्रम में रस नहीं आता। तो अब मैं क्या प्रोग्राम बताऊं? पाकिस्तान से लड़ाई छेड़ने का प्रोग्राम दूं? लड़ाई के नाम से लोगों में उत्साह आता है, लेकिन वे यह नहीं सोचते कि फौज पर देश का दस्तूरन पौने से अधिक खर्च होता है। तो फिर गरीबों की सेवा कैसे कर सकेंगे?

सारे मालक-सेवक बनें

भाइयो, मुझे इतना ही कहना है कि आप सब लोग खुश रहिए। अच्छे लोग और बुरे लोग, धनी और बिना धनी, सर्वोदय वाले और बिना सर्वोदय वाले सब लोग [illegible] आप [illegible] रहिये कि मैं [illegible] हूं और [illegible] सेवक हूं।

आदिलाबाद (हैदराबाद स्टेट)
१४ ६-५१

आठवाँ दिन—

: १२ :

भगवान का ही काम और नाम

रास्ता छोड़ कर क्यों आया?

मैं तो जा रहा था वर्धा से हैदराबाद। लेकिन रास्ता छोड़ कर इधर आपके गाँव की तरफ आ गया। उसका कारण यह है कि इधर माडवी में कस्तूरबा ग्रामसेवा केंद्र है। महात्मा गांधीजी की धर्मपत्नी कस्तूर बा का नाम तो आप सबने सुना ही है। उनके स्मरण में जगह जगह संस्थायें खोली गई हैं जो ग्रामीण स्त्रियों की सेवा कर रही हैं। माडवी में जो बहन काम कर रही है उसने इच्छा प्रकट की कि मैं उसका काम देखने के लिये वहाँ जाऊं। इसलिये मैं वहाँ जा रहा हूं।

आपके कामों से प्रसन्नता

मुझे यहाँ इस बात की बहुत खुशी हुई कि आप लोगों ने भगवान के भजन सुनाये। इतने छोटे से गाँव में हरि-चर्चा रोज चलती है यह बहुत अच्छी बात है। हरि चर्चा हर गाँव में चलनी चाहिये और रोज चलनी चाहिए

[illegible]

[illegible]

आपने एक बड़ा अच्छा काम किया है। यहाँ का कुआँ और हनुमानजी का मंदिर सबके लिये, हरिजनों के लिये भी, खोल दिया है। यह काम मुझे बहुत अच्छा लगा। भगवान के सामने भेद-भाव रखना गलत बात है। हरिजनों के साथ छूत-छात रखना और उन्हें मंदिरों में आने से रोक-टोक करना अच्छी बात नहीं है। इसलिये आपने जो काम किया है वह बहुत अच्छा है।

फिर आप लोगों ने पानी आदि का छिड़काव देकर यह प्रार्थना की जगह साफ कर ली यह भी बहुत अच्छा किया। इससे आप लोगों को शिक्षण भी मिला।

पशु बलिदान गलत चीज

मैंने सुना कि यहाँ आप लोगों के दो देव हैं। एक हनुमानजी है और दूसरी है पोचम्मा देवी। यह देवी कौन है? उसे तो मुरगी चाहिये। बकरा भी चाहिये। क्या अपने बच्चों को खानेवाला भी कोई देव हो सकता है? इसलिये आप एक ही देवता की पूजा करें। और सब देव झूठे हैं। उसके नाम पर बकरे और मुरगी काटना धर्म नहीं हो सकता।

बुनकर क्यों नहीं?

मैंने और एक बात देखी। इस गाँव में बढ़ई, लुहार, चमार कुम्हार तो है। लेकिन बुनकर नहीं है। मैं परेशान रह गया। कपड़ा तो आप सबको चाहिये। [illegible], बूढ़े, स्त्री, पुरुष सबको। इतने पर यह [illegible] है सब [illegible] नहीं है [illegible] कपड़ा [illegible]।

जाता है यह शरम की बात है। गाँव का धन इस तरह बड़ा भेजना ठीक नहीं है। मैंने यह भी सुना कि यहाँ स्त्रियाँ दोपह में खेती पर नहीं जातीं। सिर्फ सवेरे ही खेत पर जाती हैं। प उनके पास वक्त रहता है। उन्हें कातना सिखाया जाय तो कातेंगी। भगवान ने मनुष्य को दो बड़ी भारी शक्तियाँ दी हैं एक वाणी, दूसरी हाथ। वाणी से भगवान का नाम लेना चाहि हाथ से भगवान का काम करना चाहिये।

वैसा आप करेंगे तो आप जो भजन करते हैं वह कृतार्थ होगा। भगवान आप सबको ऐसी प्रेरणा दें, ऐसी प्रार्थना है।

कुम्भकापुर अर्थात् कोलम्बापुर
१५-३-५१

नौं वां दिन—

: १३ :

लघु-आरंभ का दीर्घ-फल

ग्रामसेविका का प्रेमाग्रह

मैं आज यहां आदिलाबाद से आया हूं। वर्धा से हैदराबाद जा रहा हूं। आप का गांव रास्ते में तो नहीं था लेकिन आपके यहां की सेविका पार्वती का आग्रह रहा। उसने कहा, "हम यहां देहात में काम कर रहे हैं। आप अभी न आये तो फिर कब आयेंगे कह नहीं सकते। इसलिये अभी ही चलिये।" मैंने सोचा हमारी लाड़ली लड़की आग्रह कर रही है तो हो आऊं। इससे मुकाम पर पहुंचने में चार दिन देर हो जायगी।

यह काम एक बड़े वृक्ष का पौधा है

यहां की बालवाड़ी और आरोग्य केंद्र आज सुबह हम देख आये। यह केंद्र छोटा है लेकिन वह पौधा है। ज्ञानदेव कहते हैं, "इवलें से रोप लाविलें द्वारीं त्याचा वेल गेला गगनावरी" छोटा-सा पौधा लगाया था लेकिन उसकी बड़ी बेल बन कर सारे आकाश पर छा गई। वैसे ही छोटे पौधे की अगर आप लोग ठीक देखभाल करें तो उसको आगे फूल और फल लगेंगे। बच्चा [illegible] होता है, लेकिन मां जानती है कि वह

आगे चल कर बड़ा होनेवाला है और उसकी हिफाजत करती
उसकी सेवा करती है। वैसे आप भी इस केंद्र की कीजिये।

कस्तूरबा की महत्ता

इस केंद्र का नाम है कस्तूरबा ग्रामसेविका केंद्र। गांधीजी की पत्नी थी यह तो आप जानते ही हैं। जैसे गांधीजी थे वैसी कस्तूरबा नहीं थी। लेकिन उनका भाग्य था। गांधीजी और कस्तूरबा ये नाम आज जैसे सार्वभौम हो गये हैं वैसे ही वसिष्ठ और अरुंधती के नाम थे। आज भी विवाह-विधि में वधू और वर को उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके खड़ा करते हैं और अरुंधती की तरफ इशारा करते हैं। उत्तर दिशा में वसिष्ठ का तारा है और पास ही चार अंगुलियों के फासले पर अरुंधती का छोटा-सा तारा है। इन दो तारकाओं के दर्शन करके उनको नमस्कार करने की विधि आज भी विवाह में चलती है। कौन वसिष्ठ और कौन अरुंधती? लेकिन वसिष्ठ के साथ अरुंधती का नाम भी अमर हो गया है। देह के साथ छाया होती है। लेकिन मनुष्य छाया की ओर ध्यान नहीं देता है। फिर भी छाया मनुष्य को छोड़ती नहीं है। अरुंधती का ऐसा ही था। उसका व्रत था कि पति के साथ रहना, सुख में या दुःख में। वह संकट में पड़ता तो उसके पीछे संकट में पड़ना, और वह स्वर्ग में जाय तो उसके पीछे स्वर्ग में जाना। वहाँ न रहते हुए [illegible] [illegible] उसका नाम [illegible] अरुंधती [illegible]
है [illegible]

रामचंद्रजी वनवास के लिये निकले तो वह भी उनके पीछे निकली। रामचंद्रजी ने कहा, "पिताजी ने तुझे तो वनवास नहीं कहा है।" सीता ने जवाब दिया, "आप सुखोपभोग के लिये कहीं निकलते तो शायद मैं न आती, लेकिन आप जंगल में जा रहे हैं इसलिये मैं पीछे और नहीं रहूंगी।"

इन उदाहरणों के जैसे ही गांधीजी और कस्तुरबा थी। जहां जहां गांधीजी गये वहां वे गयीं। और आखिर सरकार के साथ सत्याग्रह के युद्ध में लड़ते हुए गांधीजी के साथ जेल गयी और वहीं गांधीजी की गोद में उन्होंने प्राण छोड़ दिये। कस्तुरबा के स्मरणार्थ यह काम शुरू हुआ है। तो आप लोग इस काम में सहयोग दें और इस केंद्र से लाभ उठायें ऐसी मेरी आप से प्रेमपूर्वक प्रार्थना है।

मांडवी, (जि. आदिलाबाद)
१६-३-५१

दसवां दिन—

: १४ :

सेवा ही तीर्थ-यात्रा है

गाँव की फिक्र गाँववाले ही करें

मैं आज आपका गाँव घूम आया। यहां काफी शान्ति है। दो-चार घरों में कातना चलता है। हर घर में क्यों नहीं चलता? आपके गाँव में कपास बहुत होती है। पहले हमारे यहां सब कातते थे और खेती भी करते थे। तब खेती ज्यादा थी और लोग कम थे। इसलिये खेती में ज्यादा समय जाता था। आज खेती कम है और लोग ज्यादा हैं। फिर कातने के लिये समय क्यों नहीं मिलेगा? मैं आप लोगों को दोष नहीं देना चाहता। यह स्थिति हर गाँव में है। इसे बदलने के लिये हर गाँव में कार्यकर्ता चाहिये। अब कार्यकर्ता हर गाँव में बाहर से कैसे आयेंगे? इसलिये गाँव में से ही कार्यकर्ता निर्माण होने चाहिये।

हम लोगों को एक आदत पड़ गई है कि हम अपने परिवार के बाहर नजर नहीं देते। घर का कचरा पड़ोसी के दरवाजे पर रखते हैं। घर के बरतन साफ रखेंगे लेकिन गाँव का कुआँ साफ नहीं रखेंगे। सोचते हैं कि यह तो सब का है मैं क्यों फिक्र करूं। लेकिन [illegible] है। इसलिये [illegible]

गांव वैकुंठ बन जायगा। लेकिन आज तो मैं इतना ही चाहता हूं कि हर गांव में कम-से-कम एक कार्यकर्ता निर्माण होना चाहिये। हिंदुस्तान में यह खूबी है कि जिस गांव में कोई अच्छा आदमी होता है उसके पीछे लोग चलते हैं। गांडवी में अभी मैं गया था। वहां एक अच्छे भाई हैं तो लोग उनके पीछे जा रहे हैं। आप से मेरी प्रार्थना है कि आप अपने गांव के बारे में आज से ही सोचना शुरू करें। जिस गांव में लोग सारे गांव का नहीं बल्कि सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं वह गांव नहीं बल्कि स्मशान है।

दुखियों की सेवा कीजिये

लोगों को एक ही स्थिति में समाधान नहीं होता। मन की शांति के लिये वे तीर्थ-यात्रा करते हैं। लेकिन हम अगर एक दूसरे की सेवा करेंगे और चिंता करेंगे तो तीर्थ-यात्रा की जरूरत नहीं रहेगी। खाने का आनंद तो पशु को भी होता है। लेकिन खिलाने का संतोष मनुष्य को ही होता है। आपके गाँव में एक भी दुखी आदमी नहीं रहना चाहिये। दुखी आदमी किस जाति का है यह भी नही देखना चाहिये। दुखी लोगों की अलग जाति नहीं होती। वह दुखी है यही उसकी जाति है। वैसे ही पुण्यवान लोगों की भी जाति नहीं होती। आप ने सुना है कि संत सब जातियों में हो गये। हम महात्माओं की जाति नहीं देखते। सब महात्मा महात्मा है। वैसे सब पापी पापी ही है।

देगा । वह वहाँ पूछेगा कि तुमने पाप किया है या पुण्य । य
जो रुपू पैसा आप कमा रहे हैं वह साथ नहीं जानेवाला है । इसलि
जिसके पास जो भी धन है वह लोगों की सेवा में लगा दे । त
आप भगवान के सामने खड़े रह सकेंगे ।

तमसमु (जि॰ आदिलां)
ता॰ १३-३-५१

वहां मैंने देखा कि कई उद्योग चल रहे हैं। रंगारी का काम च
रहा था। वहां रास्ता अच्छा नहीं था इसलिये वह रंगारी का धं
चल रहा है। लेकिन रास्ता पक्का बन जाने के बाद रंगारी क
धंधा जिंदा नहीं रहेगा। कुछ देहातों में चरखे चलते हुए भी देखे।
लेकिन मोटर-रोड हो जाने पर वे कहीं भी दिखाई नहीं देंगे।
कुछ घरों में हाथ की चक्की चलती हुई देखी। मैं बहुत खुश हो
गया। लेकिन रास्ता बनने के बाद कोई पूंजीवाला यहां आ क
मिल की चक्की शुरू कर देगा और सारे देहात वाले अपनी चक्कियाँ
छोड़ कर उस मिल के गुलाम बनेंगे।

पीसने का व्यायाम

एक गाँव की बात है। वहां एक मुसलमान रहता था। उसकी बीबी बीमार हो गई। उस आदमी की मुझ पर श्रद्धा थी। उसने मुझे बुला लिया और क्या इलाज करना चाहिये इसके संबंध में मेरी सलाह मांगी। मैंने देखा कि उस बहन को सिवा बदहजमी के और कोई बीमारी नहीं है। मैंने पूछा कि घरमें आटा कौनसा आता है? जवाब मिला कि मिल का आता है। फिर मैंने सलाह दी कि आप एक चक्की घर में लगा दीजिये और बड़ी फजर उठ कर थोड़ा पीसते जाइये। उस आटे की रोटी खाते जाइये। सारा रोग दूर हो जायगा और आज से दुगुनी भूख लगेगी। उसने वैसा ही किया। वह बहन धीरे धीरे चक्की पर पीसने लगी। पंद्रह-बीस दिनों के बाद मैं उस बहन को देखने गया और पूछा कि अब तबियत कैसी है? तो उसने ...

यहां की मिलों का कपड़ा सस्ता पड़ने लगा। तब हमने विलायत के कपड़े का सस्ता होते हुये भी बहिष्कार किया। तो अब हम भी मिल का कपड़ा, सस्ता होने पर भी, नहीं लेंगे ऐसा व्रत क्यों नहीं लेते? ऐसा व्रत अगर नहीं लेंगे तो फिर देहात में कौनसा उद्योग रहेगा? सारे देहात के उद्योग अगर शहरवाले छीन लेंगे, और हम भी मूढ़ बन कर कहेंगे कि बहुत अच्छा हुआ सस्ता मिलने लगा, आप शहरवाले सेवा ही कर रहे हैं, तो फिर अनाज भी बाहर से लेने लगेंगे क्या? कुछ लोग तो आज यह भी कह रहे हैं कि अनाज पैदा करने की अपेक्षा तबाकू पैदा करना अधिक फायदेमंद है। लेकिन तबाकू से यद्यपि पैसा मिलेगा फिर भी अन्न कैसे मिलेगा? खाने के लिये अन्न चाहिये इसलिये वह गांव में ही पैदा करना चाहिये। उसी तरह पहनने के लिये कपड़ा चाहिये तो वह भी गांव में ही तैयार करना चाहिये। घर में कपास होती है। उसको धुन कर पूनी बना लेनी चाहिये। घर में ही कातना चाहिये और बुनना भी घर में ही चाहिये। बुनना कोई कठिन काम नहीं है। ऐसा होगा तो किसान के घर में उद्योग दाखिल होगा और उसका घर सुखी होगा। फिर झगड़े भी नहीं होंगे।

आज जहां देखो वहां झगड़े ही झगड़े हैं। खाने को पूरा नहीं मिलता इसके कारण ये सब झगड़े हैं। हमें जो चीजें हर [illegible] लगती हैं वे अगर हम घर पर ही तैयार कर लेंगे तो हम [illegible] दूसरों [illegible] नहीं और हम भी किसी को [illegible] [illegible]

[illegible] धारण करना [illegible]

हाथ-चक्की के चार फायदे

मेरी आप से प्रार्थना है कि मिलें होने पर भी आप अपने घर के उद्योग मत छोड़िये । आटा घर पर ही पीसिये । मिल हो जाने पर भी वहां नहीं पिसायेंगे ऐसी शपथ लीजिये । आप कहेंगे दो ही पैसे में पिस कर मिलता है । लेकिन रोज के दो पैसे माने महीने में एक रुपया और साल भर में बारह रुपये हो जाते हैं । आप का गांव ढाई सौ घरों का होगा तो साल भर में तीन हजार रुपये बच जायेंगे ।

दूसरी बात यह होगी कि रोज का आपका व्यायाम चला जायगा । आज अपने देहात के लोग कमजोर हैं । और पीसने की आदत छूट जायगी तो बाद में यह काम बहुत कठिन मालूम होगा ।

तीसरी बात यह कि मिल का आटा हम छः-छः दिनों तक खाते रहेंगे । ताजे आटे में और हाथ-चक्की पर पीसे हुए में जो ताकत है वह मिल के और बासे आटे में नहीं है ।

चौथी बात यह कि हम आलसी बनेंगे, देर से उठेंगे । आज जो भगवान का नाम लेते हैं वह भी नहीं लेंगे । मुझे याद है कि मेरी मां सुबह जल्दी उठ कर करीब घंटा भर पीसती थी । और पीसते हुए भगवान का नाम लेती थी । हमारे संतों ने चक्की पीसते हुए गाने के लिये भजन और अभंग बनाये हैं । मेरी मां तुकाराम का अभंग गा कर पीसती थी । "पहिली माझी ओवी ओवीन जगत्र गाजीन पवित्र पांडुरंग" (यह अभंग विनोबाजी ने पूरा गाकर सुनाया) ।

तो अगर चक्की बंद हुई तो ऐसे भजन भी बंद हो जायें इसलिये मुझे आप को सावधान करना है। आप की सेवा करने वहाने बाहर से लोग आवेंगे और आप छूटे जायेंगे इसलिये १ अपने गाँव के धन्धों को कभी भी मत छोड़िये यही मुझे कहना है

गुडी हत्नूर, (जि० आदिलाबाद)
१८-३-५१

बारहवां दिन—

: १५ :

व्यापार सेवा के लिए

हिंदुस्तान के बाजार का बिगड़ा रूप

आप इतने लोग दूर दूर के गावों से यहां इकट्ठे हुए हैं यह देख कर मुझे खुशी होती है। मुझे इस गांव की कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन जिन लोगोंने कार्यक्रम तय किया उन्होंने यहां का मुकाम रखा, और यह अच्छा ही हुआ। क्योंकि आज यहां का बाजार था। दुनिया भर में बाजार कैसे चलता है यह तो दुनिया जाने! लेकिन हिंदुस्तान में जहाँ बाजार भरता है वहां झूठ ही झूठ का बाजार होता है। आज ही का किस्सा है। एक दूकान पर एक आदमी पुस्तक खरीदने गया। दूकानदार ने उसको वह पुस्तक चौदह आने में दी। फिर वह आदमी दूसरी दूकान पर पहुंचा। वहां उसको वही पुस्तक दिखाई दी तो उसने उसके दाम पूछे। दूकानदार ने छह आने बताये। तो फिर वह आदमी पहली दूकान पर वापिस आया और दूकानदार से पूछने लगा कि इस किताब के तुमने चौदह आने कैसे लिये जब कि यह दूसरी दूकान पर तो छह आने में मिलती है? दूकानदार ने जवाब दिया, भाई, मैं तो व्यापारी हूं। मुझे जो दाम लेने थे मैंने लिये। तुमको अगर यह पुस्तक दूसरी दुकान पर छह आने में मिलती थी तो आप वहां से खरीदते।

याने दूसरी दूकान पर नहीं खरीदा, यह आपका ही दोष है। दूकानदार का कोई दोष ही नहीं है। ऐसा सब हो रहा था। इतने में हमारे से एक साथी वहां पर पहुंचा। उसने पूछा क्या बात है? उस आदमी ने कहा कि यह पुस्तक इस दूकानदार ने चौदह आने में दी जब कि दूसरी दूकान पर छह आने में मिलती है। हमारे भाई ने पुस्तक खोल कर दाम देखे और कहा, इस पुस्तक के दाम न चौदह आने हैं और न छह आने हैं बल्कि तीन आने हैं। वह कीमत उस पुस्तक पर छपी थी। उस तीन आने में दूकानदार का कमीशन आदि सब आ गया। इसलिये दूकानदार को उससे अधिक कीमत लेने का कोई हक नहीं था। फिर दूकानदार का और पुस्तक खरीदने वाले का झगड़ा शुरू हुआ। मैं इस बात को आगे बढ़ाना नहीं चाहता। हमारे बाजार कैसे होते हैं यह समझ लो "झूठ ही लेना झूठ ही देना झूठ चबेना।"

व्यापारियों का धर्म

होना तो यह चाहिये कि व्यापारी सेवा का माल रखें। व्यापार एक धर्म है। हमें शास्त्रकारों ने बताया है कि वैश्यों को व्यापार के धर्म का आचरण करना चाहिये। धर्म का मतलब इतना नहीं होता, बल्कि सेवा करना होता है। जो चीज एक जगह नहीं मिलती है उसको दूसरी [illegible]

मालिक को जाग जाना चाहिये

असल में किसान मालिक है और व्यापारी सेवक है। तो सेवक कभी स्वामी से बढ़कर नहीं होता। जब हिन्दुस्तान में मालिक गरीब है तो सेवक भी गरीब ही होना चाहिये। लेकिन बात उल्टी हो गई है। मालिक गरीब बन गया है और सेवक श्रीमान बन गया है। और वह श्रीमान कैसे बना? मालिक को लूट कर। आज अगर उन सेवकों को कोई उनका धर्म सिखावे तो वे नहीं सीखेंगे। इसलिये अब मालिक को ही जाग जाना चाहिये। मालिक के जागने का मतलब यह है कि वह अपना आधार बाजार पर न रखे। मेरा तो विश्वास है कि अगर गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गाँव में बना लेंगे तो हर गाँव बादशाह बन सकता है। यह किसान क्या खरीदने के लिये आता है? उसको भाजी चाहिये तो क्या वह अपने खेत में भाजी पैदा नहीं कर सकता? आँगन में भी भाजी बन सकती है। कोई कपड़ा खरीदने आते हैं। गाँव में कपड़ा क्यों नहीं बन सकता है? अगर कपड़ा नहीं बन सकता तो कल आप रोटी भी बाजार से ही खरीदने लगोगे। अगर इस तरह बनी बनाई चीजें खरीदते रहोगे तो लूट में से आपको कौन बचायेगा?

भगवान की व्यवस्था से सबक सीखो

हमें गांधीजी ने चरखा चलाने को कहा, और यही कहते कहते वह बूढ़ा मर गया। उनका यह संदेश अब भी सुनने लायक है। [illegible] कहते हैं अब तो स्वराज्य हो गया अब कातने की क्या जरूरत है [illegible] मैं कहता

...सकते। अपने गाँव में हम शांति नहीं रखेंगे और हर समय पुलिस को मदद के लिये बुलावेंगे तो वह होनेवाली बात नहीं है। विशेष मौके पर पुलिस की हम मदद माँगें तो सरकार दे सकती है। बाकी हमारी रोज की शांति, हमारा अनाज, हमारा कपड़ा, हमारी सफाई, हमारा शिक्षण, सारा गाँव में ही करना चाहिये।

लोग कहते हैं कि सरकार हर गांव में स्कूल खोले। लेकिन सरकार के पास उतना पैसा नहीं है। अधिक कर देने के लिये आप तैयार नहीं हैं। मैं कहता हूं कि आप आपस आपस में क्यों नहीं सिखाते? जो थोड़ा बहुत पढ़ा हुआ है वह अगर रोज एक घंटा दूसरे को पढ़ायेगा तो सारा गाँव शिक्षित हो सकता है। मान लीजिये कि हजार लोक-संख्या के गांव में दस लोग पढ़े हुए हैं। वे अगर हर साल दस लोगों को पढ़ा देंगे तो एक साल में सौ लोग पढ़े-लिखे बन जायेंगे। और इस तरह दस साल में सारा गाँव पढ़ा-लिखा बन जायगा. इतनी यह आसान बात है। यही बात दूसरे कामों के बारे में भी है।

उद्धरेद् आत्मनात्मानं

हमारे सब काम हमें खुद करने चाहिये। भगवान ने गीता में कहा है, "उद्धरेदात्मनात्मानं" खुद का उद्धार खुद को ही करना चाहिये। दूसरों पर भरोसा रख कर मत बैठो। गाँव का राज्य गाँव वालों को स्थापित करना है। जो स्वराज्य दिल्ली में या आदिलाबाद में है वह आप को काम नहीं देगा। आप को वही स्वराज्य काम देगा जो आप के गांव में बनेगा। यही देखो न। शहर में मनुष्य

के शरीर को वैद्य तब तक ही मदद दे सकता है जब तक श
में ताकत बची हुई होती है। अगर शरीर की ताकत खतम हो ग
है तो वैद्य कुछ नहीं कर सकता। इसलिये हमारा काम यह
कि शरीर का आरोग्य हम अच्छा रखें। उसके लिये हमें गांधीजी
बताया है कि कुदरती इलाज पर आधार रखो। सूर्यप्रकाश, प
मिट्टी, आदि से रोग अच्छे करना सीख लेना चाहिये। आज
तो लोग कहते हैं हर गाँव में एक दवाखाना हो। अभी तक
नहीं हुआ है यह परमेश्वर की कृपा है। अगर वे लोग हर गाँ
दवाखाना खोल सकें, तो गाँव का पैसा दवाखाने के निमित्त से
जायगा और रोग दसगुना बढ़ेंगे जरा कहीं कुछ हुआ तो
दवाखाने में दौड़ेंगे। और यह समझ लो कि एक दफा वैद्य
घर में आता है तो फिर वह घर नहीं छोड़ता। कुछ लोग
हैं फलाना डॉक्टर हमारा फॅमिली डॉक्टर है। याने घर में
माता-पिता होते हैं वैसे वह डॉक्टर भी घर का ही एक हिस्सा
[illegible]। इस तरह हर बात में अगर हम गुलाम बनते जायेंगे तो
स्वराज्य काहे का? सरकार का काम आप को बाहर से कपड़
देने का नहीं है। वह आप को कातना, बुनना आदि सिखा द
[illegible] आप की खिदमत करने के लिये ही है। आप
चाहेंगे वैसा वह करेगी। लेकिन आप को उसके लिये पैसा
[illegible] की तैयारी रखनी होगी। अगर कहीं हम ऐसी नहीं
[illegible]
[illegible]

तेरहवाँ दिन—

: १७ :

देहात के काम

आप सावधान रहें

आप का यह गाँव बिल्कुल ही छोटा है। लेकिन इ गाँव में मैंने जो काम देखा है उससे मुझे बहुत ही आनंद हु है। क्यों आनंद हुआ यह आप लोगों को नहीं मालूम हो सकता बात ऐसी है कि आप के गाँव में मैंने बीस पचीस चरखे चल हुए देखे। इस तरह चरखों का काम मैंने अपनी इस यात्रा में अ तक कहीं नहीं देखा। और यह दृश्य देख कर मेरे हृदय को ब संतोष हुआ। लेकिन आप लोगों को मैं जाग्रत कर देना चाह हूं। यहां अभी तक बाहर के व्यापारियों का ज्यादा प्रवेश न हुआ है। लेकिन आगे चल कर स्थिति ऐसी ही नहीं रहेगी बाहर के व्यापारी यहां भी आयेंगे। मुझे आज कल व्यापारि का सब से अधिक डर लगता है। वास्तव में व्यापारी तो हैं चाहिये ग्रामों के सेवक। लेकिन इन दिनों ऐसा हुआ है कि व्या रियो में दयाधर्म नहीं जैसा रह गया है। इसलिये वे जब कहीं जाते तो गावों की सेवा के बजाय अपने स्वार्थ को ही देखते हैं। आ नामीरानवाले एक भाई मुझसे मिलने आये थे। बातचीत में उन्हें बताया कि यह जिला जो अभी बहुत पिछड़ा हुआ है रैनगाा

पुल बनने के बाद आगे बढ़ जायगा। क्योंकि फिर बरार के साथ बहुत व्यापार चलेगा। लेकिन फिर यह जिला आगे बढ़ेगा इसका मतलब इतना ही है कि यहां व्यापारियों का जमघट बन जायगा। मतलब उसका इतना ही है कि फिर आपके गाँव में जो अच्छा दृश्य हमने देखा वह देखने को नहीं मिलेगा। बाहर के व्यापारी आपके गाँव में आयेंगे। कपड़ों के अच्छे अच्छे नमूने आपको बतायेंगे, आप लोभ में पड़कर उनसे कपड़ा खरीदने लग जायेंगे और गुलाम बन जायेंगे। आज भी मैं देखता हूं कि आपके गाँव में सूत कतता है। कुछ लोग हाथ का कपड़ा पहनते हैं; लेकिन मिल का कपड़ा भी बहुत चलता है। लेकिन जब ये व्यापारी आयेंगे तब सारा का सारा कपड़ा बाहर से आने लग जायगा। इसलिये मैं आज ही आपको सावधान करना चाहता हूं कि आप शपथ लीजिये कि बाहर का कपड़ा नहीं लेंगे। अगर आप ऐसा नहीं करते तो आप के देखते देखते सारा गाँव दरिद्र हो जायगा। आज मैं आपके गाँव में घूम आया। सारे घर देख आया। घर बहुत तो हैं नहीं इसलिये समय भी ज्यादा नहीं लगा। छोटासा गाँव है। आज आप लोग संतोष से रहते हैं। लेकिन अगर आप आलस में पड़े और बाहर की चीजें खरीदने लगे तो आज का यह संतोष नहीं रहेगा।

[illegible]

देखा कि उस घर की लक्ष्मी सारे कपड़े मिल के पहने हुए थी । मैंने उन्हें प्रेम से समझाया कि इस घर में मैं आया हूं तो अब यहां बाहर का कपड़ा नहीं आना चाहिये। उन्होंने मेरी बात को मान लिया । अब मैं नहीं जानता कि वे कहां तक अपना वचन पालन करेंगे । भगवान से मेरी प्रार्थना है कि उन्होंने जो वचन दिया है उसका पालन करने की शक्ति वह उन्हें दे ।

हिंदुस्तान की पहले की स्थिति

मैं अभी हैदराबाद में होनेवाले सर्वोदय समेलन के लिये जा रहा हूं । सर्वोदय का मतलब है सब की उन्नति । सर्वोदय में यह बात नहीं आती कि किसी एक का भला हो, दूसरे का न हो। इसलिये सर्वोदय का चिंतन करनेवाले मुझ जैसों के सामने यह बड़ी समस्या है कि शहरों के साथ देहातों का भला कैसे होगा ? हम चाहते हैं कि भला शहरों का भी हो और गाँवों का भी । एक जमाने में हिंदुस्तान के सारे गाँव बहुत सुखी थे । परदेश से आनेवाले लोग उसकी गवाही देते थे । बीच में जब अंग्रेज यहां आये तो उन्होंने भी देखा कि यहां हर गाँव में कपड़ा बनता है और दूसरे भी बहुत से उद्योग चलते हैं । तो उन्होंने लिखा है कि गाँव गाँव में दूध बहुत मिलता है लेकिन आज हम देखते हैं कि गाँवों को मुश्किल से [illegible] नहीं [illegible] है । यह [illegible]

इसलिये वह काम अधिक नहीं रहता। मगर खादी बनाना है। उसका क्या किया जाय? अगर कोई व्यक्ति ऐसा हो जो आप के गांव की सेवा करे तो आप के गांव की उन्नति होगी। वह व्यक्ति आपके गांव का ही होना चाहिये। कार्यकर्ताओं का काम है कि ऐसे गांव की सेवा करें। मुझे तो ऐसे गांव में रहने की इच्छा हो जाती है। यहां रहा तो पहले मैं कातनेवालों को पूनी सिखाऊंगा। आज तो कातनेवाले अपनी पूनी नहीं बनाते। दूसरे लोग उनके लिये पूनी बनाते रहे हैं। अपने घर में कपास बने और दूसरा मनुष्य उसकी पूनी बनावे और फिर मैं कातूं ऐसा क्यों होना चाहिये? अगर हम अपने ही घर में पूनी बनाते हैं तो पूनी अच्छी बनती है और सूत भी अच्छा कतता है। दिल्ली में हमने यह प्रयोग करके देखा। पंजाब की निर्वासित स्त्रियों को कातने के साथ हमने उन्हें पूनी बनाना भी सिखा दिया। परिणाम यह हुआ कि जो स्त्रियां पहले आठ दस नंबर तक कातती थीं वे सोलह बीस नंबर तक सूत कातने लगीं। यानें पहले बिलकुल मोटा सूत कातती थीं अब महीन कातने लगी हैं। बारीक सूत से धोतियां और साड़ियां बन सकती हैं। आप देख रहे हैं कि मदालसा यहां बैठी पूनी बना रही है। पांच पांच [illegible] बच्चे भी ऐसी पूनी बना लेते हैं। [illegible] अगर [illegible] पूनी बनाने [illegible]

[illegible]

[illegible]

रह गई। आज की सभा जो भी देखते थे अगर मनमें शंका रखते हैं कि चरखा कैसे चलेगा इन दिनों, तो यह दृश्य देखकर वे समझ जायेंगे। लेकिन आज तो आप लोगों ने बता दिया कि आप खेती का काम भी कर सकती हैं और चरखा चला कर अपना कपड़ा भी बना लेती हैं।

लक्ष्मी की कथा

अब मुझे यही कहना है कि आप यह काम निष्ठा से अधिक बढ़ाइये। अपने गाँव में हाथ का बना कपड़ा ही हमें पहनना चाहिये। बाहर का कपड़ा यहां नहीं आना चाहिये। आप कातती है और उसका कपड़ा भी पहनती है यह अच्छा है। लेकिन खद्दर ही पहनेंगे दूसरा कपड़ा नहीं पहनेंगे ऐसा व्रत आपने नहीं लिया है। ऐसा व्रत न लेने में क्या खतरा है यह मैं आपको समझाऊंगा। खतरा यह है कि मिल का कपड़ा यहां आता रहेगा और आपको उसका मोह होगा। फिर आप खुद उस मिल के कपड़े को शायद नहीं पहनेंगी। लेकिन अपनी लड़कियों को वह पहनायेंगी और कहेंगी कि कैसी सुंदर दीखती है मेरी लड़की मिल के कपड़े में। लेकिन मैं आपको कहता हूं कि मिल के कपड़े में आपके लड़के लड़कियां खूबसूरत नहीं बल्कि बदसूरत दीखेंगी। क्योंकि मिल का कपड़ा अगर घर में आता है तो घर की लक्ष्मी बाहर चली जाती है। और लक्ष्मी अगर बाहर गई तो फिर घर की क्या शोभा रही? लक्ष्मी की कथा है कि वह शामके समय गाँव में घूमती है। जिस घर में [illegible] है कि [illegible] के समय भी दीपक जल रहा है और

काम हो रहा है उस घर में वह प्रवेश करती है। उसका मतलब यह है कि जहां दिन में भी काम चलता है और रातको सोते तक निरन्तर काम और उद्योग चलता है उसी घर पर लक्ष्मी की कृपा होती है। चरखे से इस तरह घर घर काम हो सकता है।

कातनेवालों की जाति नहीं होती

मैं देख रहा हूं कि कुछ स्त्रियां कात रही हैं लेकिन कुछ नहीं कातती हैं। एक बाई से मैंने पूछा कि वह क्यों नहीं कातती? मिल का कपड़ा क्यों पहनती है? उसने उत्तर दिया कि हमारी जाति में कातना निषिद्ध है। यह खयाल गलत है। जो भी कपड़ा पहनता है उसको कातना चाहिये। जैसे बढ़ई की या लुहार की जाति होती है वैसे कातनेवालों की कोई जाति नहीं होती। हरेक जाति को कातना चाहिये। हर घर में रसोई बनती है उसमें जाति का कोई प्रश्न नहीं होता। वैसे हर घरमें कातने का काम होना चाहिये। मैं यह भी देखता हूं कि स्त्रियां तो कातती हैं लेकिन पुरुष नहीं कातते हैं। शायद उनको लगता है कि वे कातेंगे तो उनका धर्म बिगड़ेगा। स्त्रियां कपड़ा पहनती हैं तो पुरुष क्या नंगे ही रहते हैं? इसलिये पुरुषों को कातना चाहिये स्त्रियों को कातना [illegible] को कातना चाहिये और [illegible]
[illegible]

बेकार रहेंगे तो शैतान मन में घर करेगा

लोग पूछते हैं कि अब तो स्वराज्य आया है अब कातने की क्या जरूरत है ? तो आप से यह भी पूछ सकते हैं कि अब स्वराज्य आया है तो रसोई करने की क्या जरूरत है ? स्वराज्य के पहले घर में रसोई करने की जरूरत थी, स्वराज्य के बाद भी जरूरत है। मिल का पराक्रम आप को सुनाता हूं। लड़ाई के पहले मिलें फी आदमी १७ गज कपड़ा देती थीं। और अब १२ गज तैयार करती हैं। इस पर से आप के खयाल में आयेगा कि मिल पर भरोसा रखना कितना घातक है। मैं तो कहना चाहता हूं कि मिलें अगर ५० गज भी कपड़ा तैयार करें तो भी उसको खरीदने में देहातवालों का भला नहीं है। कोई कहते हैं कि मिल का कपड़ा सस्ता होता है। मैं कहता हूं कि वह मुफ्त में भी मिले तो भी हम वह कपड़ा नहीं लेंगे इस तरह का निश्चय हमें करना चाहिये। ऐसा निश्चय अगर देहातवाले नहीं करेंगे तो उनके सारे धंधे खतम हो जाएंगे। और आप के धंधे अगर नष्ट हो गये तो फिर आप को मुफ्त कौन खिलायेगा ? इसलिये मैंने लक्ष्मी का जो चरित्र कहा था वह याद रखिये। उद्योग चले गये तो लक्ष्मी चली जायगी, हम आलसी बनेंगे और फिर आपस आपस में झगड़े शुरू हो जायेंगे। फिर लोगों में तरह तरह तरह के व्यसन शुरू हो जायेंगे। नशाखोरी चलेगी। लोग शराब और बीड़ी पीने लगते हैं। बीड़ी पीनेवाले तो यहां तक आगे बढ़ गए हैं कि जहां प्रार्थना चलती है वहां भी वे बीड़ी पीते हैं। याने साधारण सभ्यता भी वे नहीं जानते हैं कि

जहां लोग इकट्ठे होते हैं वहां बीड़ी नहीं पीनी चाहिये। जहां उद्योग नहीं होते हैं और मनुष्य खाली रहता है वहां ये सारे ढंग सूझते हैं। फिर झगड़े बढ़ते हैं और उसके साथ व्यभिचार आदि भी चलते हैं। इसीलिए हमारे पुरखाओं ने हमें सिखाया है कि "क्षणार्धमपि व्यर्थं न नेयम्" एक क्षण भी खाली नहीं रहना चाहिये। इस तरह एक एक क्षण का हम हिसाब नहीं रखेंगे तो फिर हमारे मन में शैतान काम करने लगता है और यह विचार शुरू होता है कि दूसरे के जेब से पैसे कैसे लूटे जाय। व्यापार में सर्वत्र झूठ शुरू होता है। चोरियां कैसे की जाय इसकी युक्तियां खोजी जाती हैं। यह सब हिंदुस्तान में शुरू हो रहा है इसलिये मैं आप लोगों को सावधान कर रहा हूं।

ग्रामराज्य और रामराज्य की व्याख्या

जो लोग अपने घर में सूत कातेंगे उनका अपना कपड़ा घर का होगा। लेकिन उनके घर में अगर ज्यादा कपड़ा तैयार होता है तो गांव के दूसरे लोग उसको खरीद सकते हैं। गांव में कुछ लोग जरूर ऐसे होंगे कि जिनके लिए खुद सूत कातना संभव नहीं होगा। तो वे अपने गांव में बने सूत का कपड़ा खरीदेंगे। यह जो मैंने कपड़े के लिये कहा वही दूसरे उद्योगों को भी लागू है। तेल गांव में बनाना चाहिये। गुड़ गांव में बनाना चाहिये, आटा घर घर पीसा जाना चाहिये। इस तरह आप देहात की स्त्रियां और पुरुष काम करेंगे तो यह [illegible] आदर्श होगा। इसके [illegible] ग्रामराज्य कहते हैं [illegible] आर्थिक [illegible] यह होगा तब

वह ग्रामराज्य होगा। और रामराज्य तब होगा जब आपस आपस में कोई झगड़ा नहीं रहेगा, जब एक दूसरे पर प्यार करेंगे, जब एक दूसरे का साथ देंगे और सहकार करेंगे। अपने देश के लिये स्वराज्य तो आया है। लेकिन ग्रामराज्य स्थापित करना बाकी है। उसके लिये अब हमें झगड़ना है, मेहनत करनी है। यह बड़ी भारी लड़ाई होगी।

ग्रामराज्य के लिए लड़ाई लड़नी है

स्वराज्य के लिए तो लड़ाई हो गई। लेकिन उससे भी कठिन लड़ाई आगे ग्रामराज्य के लिये होनेवाली है। आज तक हमने जो लड़ाई लड़ी वह अहिंसात्मक थी। वैसे यह लड़ाई भी अहिंसात्मक ही होगी। यह लड़ाई टलनेवाली नहीं है। उस लड़ाई के सिपाही आप सारी बहनें और भाई होंगे। उधर शहरवाले लोग व्यापार में लगे हुए हैं, ग्रामों की कोई चिंता नहीं करते हैं। उनके साथ हमारा कोई भेदभाव तो नहीं है, लेकिन झगड़ा जरूर है। उस युद्ध में हमारे औजार होंगे चरखा और हल। हमारे युद्ध के लिये हमें बम की जरूरत नहीं है, तोपों की भी जरूरत नहीं है। हमें जरूरत है काम करने के औजारों की।

गोपाल पेठ (जि० आदिलाबाद)
२१-३-५१

पन्द्रहवाँ दिन—

: १९ :

सर्वोदय की महिमा

स्वराज्य शब्द की महिमा

हम सर्वोदय के यात्री अपनी पैदल मुसाफिरी में आप के गाँव में आ पहुंचे हैं। सर्वोदय एक महान शब्द है और उसका अर्थ भी महान है। समाज के सामने जब कोई महान शब्द होता है तो उससे समाज को शक्ति मिलती है। शब्द की महिमा अपार होती है। जिस समाज के सामने कोई बड़ा शब्द नहीं होता है वह समाज शक्ति-हीन और श्रद्धा-हीन बनता है। शब्द की शक्ति का यह अनुभव हर जमात को और हर देश को आया है। हमारे देश में चालीस साल तक स्वराज्य शब्द चला और उसका पराक्रम तथा महिमा सब ने देख ली। १९०७ में स्वराज्य शब्द दादाभाई नौरोजी ने हमें दिया और १९४७ में उसका दर्शन हमें मिला। उसका चमत्कार आखिर तो हैद्राबादवालों ने भी देख लिया। हैद्राबादवाले बहुत दिनों से सोच रहे थे कि बाकी के सारे देश में स्वराज्य का उदय हुआ, हमारा क्या हाल होगा! उनको भी अनुभव हुआ कि जो शक्ति देशभर में पैदा हुई थी उसका स्पर्श यहां भी होना था। यह संस्थान उससे अलग नहीं रह सकता था।

स्वराज्य के बाद का शब्द

इस तरह स्वराज्य शब्द का कार्य हिंदुस्तान में हो गया और उसके साथ साथ महात्मा गांधीजी का अंत हुआ। उनके जाने के पीछे सारा देश हक्का-बक्का हो गया और कुछ रोज तो सूझता ही नहीं था कि इस देश का क्या होनेवाला है ! लेकिन परमेश्वर की कृपा से सब लोग स्थिर हो गये और अब ऐसा समय आ गया है कि देश के प्रगति का अगला कदम रखा जाय। अगला कदम तो तब रखा जा सकता है जब कि जहां जाना है उसकी दिशा तय हुई हो। तो गांधीजी के जाने के बाद चंद लोग इकट्ठा हुए और उन्होंने अपने देश को सर्वोदय शब्द दे दिया। यह शब्द भी गांधीजी का ही रखा हुआ था। और उसकी जड़ हिंदुस्तान की संस्कृति में प्राचीन काल से जमी हुई है। जब स्वराज्य नहीं हुआ था तब तो वही एक शब्द हमारे सामने था और परदेशियों का यहां का राज्य हटाने में ही हम सब लगे हुए थे। हमारे देश में तरह तरह के निकम्मे झगड़े उठे हुए थे, उनको [illegible] का काम हुआ [illegible] स्वराज्य था। अब स्वराज्य-प्राप्ति के बाद [illegible] है और [illegible] है। [illegible]

स्वराज्य के बाद का नैतिक कार्य

सर्वोदय शब्द ने हमारे सामने स्पष्ट उद्देश्य रख दिया। उद्देश्य ऐसा है जिसमें सब लोगों का समावेश हो सकता है मेरे अभिप्राय में स्वराज्यप्राप्ति के बाद हिंदुस्तान में जो तरह त के राजकीय पक्ष पैदा हुए हैं उनकी कोई जरूरत नहीं थी स्वराज्य के बाद हिंदुस्तान में जो असंख्य समस्यायें पैदा हुईं बहुत सारी अनैतिक थीं। याने जनता की नीति गिरी हुई उसका हमें तरह तरह से अनुभव आया। और आज भी। यही देखते हैं कि जहां जाओ वहाँ नीति-हीनता और शील-भ्रष्टता का दर्शन होता है। इसके लिये मैं जनता को दोष नहीं देता हू। क्योंकि मैं जानता हूं कि सारी की सारी जनता नीति-भ्रष्ट नहीं हो सकती। लेकिन वैसा नीति-भ्रष्टता का दर्शन अगर सर्वत्र होता है तो यही समझना चाहिये कि उसका कारण परिस्थिति में मौजूद है। जिम्मेदारी चाहे परिस्थिति की हो चाहे जनता की हो लेकिन जो है उसको हमें दुरुस्त करना है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद सब लोगों का शील कायम रखना, आपस आपस में प्रेम-भाव कायम रखना आदि बिल्कुल बुनियादी काम करना जरूरी हो गया था और है। इस हालत में किसी भी तरह के राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका ही नहीं रहता है। जब समाज का नैतिक स्तर और आपस आपस का प्रेम-भाव बढ़ेगा तब राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका आ जाता है। इसलिये जिन जिन लोगों से जब जब बात करने का मौका मिलता है तब उन्हें मैंने यही कहा है कि भाइयो,

यह राजकीय लेबल अब अपने सिर पर मत चिपकाओ। और केवल इन्सान बन जाओ।

आज का परदेशावलंबी स्वराज्य किस काम का

देखिये मैं तो पैदल घूम रहा हूं। बीच-बीच में छोटे-छोटे गांवों में जाना होता है तो बीच में शहर देखने को मिलते हैं। तो मैं देखता हूं कि उधर गावों की परिस्थिति क्या है और इधर शहरों की परिस्थिति क्या है! देहात में एक तरह का दुःख है तो शहरों में दूसरी तरह का। देहात में देखता हूं कि लोगों को कपड़े पहनने के लिये नहीं हैं और शहर में देखता हूं कि लोग शराबी बन रहे हैं। वस्त्रों का न होना एक बड़ा भारी दुःख है तो शराबी होना कोई सुख की बात नहीं है। तरह तरह के व्यसन शहरों में बढ़ रहे हैं। स्वराज्य के पहले स्वदेशी विदेशी का जो फरक हम करते थे वह भी अब भूल गये हैं। जो भी अच्छी चीज देखते हैं खरीद लेते हैं। स्वराज्य के बाद हमारे शहरों की अगर यह हालत हो जाय कि सारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भर जायं तो वह स्वराज्य किस काम का! और मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि आप परदेशी वस्तु खरीदते रहिये, आप के स्वराज्य पर कभी आक्रमण नहीं होगा। आपका स्वराज्य कायम रहेगा। क्योंकि दूसरे देशों को क्या फिक्र पड़ी है कि आप [illegible] कब्जे मे रख कर सारा जिम्मा [illegible] उनका [illegible] सकता है। और इन दिनों [illegible]

[illegible] हुआ है। इन [illegible]

देश यह नहीं सोचते कि दूसरे देशों पर अपनी राजकीय सत्ता कायम करें। अगर व्यापारी सत्ता हासिल है तो राजकीय सत्ता हासिल करने में कोई लाभ नहीं है। मतलब यह हुआ कि फिर हमारे स्वराज्य का कोई अर्थ ही नहीं रहेगा अगर हमारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भरे रहे। यह है हमारे शहरों का हाल।

उधर देहातों का हाल यह है कि उन लोगों के पास कोई धंधे नहीं हैं। उनके जो छोटे छोटे धंधे थे वे शहरवालों ने छीन लिये। यहीं देखो, हम जहां बैठे हैं वह एक धान कूटने की मिल है। अगर धान कूटने का धंधा देहात में चलता तो लोगों को काम मिलेगा, वह भी शहर में गया तो देहातवाले बेकार हो जायेंगे।

तो उधर परदेशी वस्तुओं से शहर के बाजार भर रहे हैं उनके विरोध में शहरियों का पराक्रम कुछ नहीं चलता है। उनका सारा पराक्रम देहात के धंधे डुबाने का है।

देहात के धंधे सुरक्षित रहें

होना यह चाहिये कि देहात के धंधों को देहात में रखना चाहिये और परदेश से जो माल आ रहा है उसके विरोध में शहरों में धंधे खड़े होने चाहिये। आज की हालत यह है कि परदेश के लोग हमारे शहरों को लूटने जा रहे हैं और शहरवाले हमारे देहातों को लूटने जा रहे हैं। अगर इसमें उलटा बना यानि परदेश के [illegible] के विरोध में शहरवाले खड़े हों और देहात के धंधों का [illegible] देहात और शहर [illegible] का सहयोग हो।

और यह देश शक्तिशाली बनेगा। हम हमारे कुछ जंगलों को जैसे रिज़र्व रखते हैं वैसे देहात के लिये कुछ धंधे रिज़र्व रखने चाहिय। इस तरह देहात के धंधों को हमने सुरक्षित नहीं रखा तो देहात उजड़ जायेंगे और आखिर देहाती लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे। तो उधर परदेश के व्यापारी शहरों को लूटेंगे और इधर देहात के लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे तो फिर शहरों की क्या हालत होगी आप ही सोचिये। तो स्वार्थबुद्धि से भी आप को देहात की रक्षा करनी चाहिये।

देहात उजड़ जाय तो शहर और देहात की लड़ाई अटल है

तो हम लोगोंकी अकल अब इस बात में लगनी चाहिये कि देहात और शहर दोनों का सहयोग कैसे हो और दोनों मिल कर परदेशी माल के विरोध में कैसे शक्ति पैदा करें! यह नहीं हो रहा है और मुझे देहातवालों को कहना पड़ता है कि भाई तुम्हारे और शहरियों के बीच लड़ाई होनेवाली है। मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता। लेकिन अगर शहरियों का रवैया नहीं बदला तो यह लड़ाई अटल है, यह मैं देख रहा हूं और वही मुझे कहना पड़ता है।

सर्वोदय का ध्येय

मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता इसीलिये सर्वोदय के प्रचार के लिये आप को समझा रहा हूं। और मैं कहता हूं कि इस समय इस शब्द में जो शक्ति है वह आप चिन्तन करेंगे तो आप को महसूस होगी। सर्वोदय शब्द हमें यह समझा रहा है कि देश में कोई

शक्तिसंचय हो जाना चाहिये। देश में एक घर भी अशक्त नहीं रहना चाहिये। अगर इस तरह हम नहीं सोचते हैं और वर्गों के झगड़ों की बात निकालते हैं या कोई खास लोगों के हित की ही बात सोचते हैं तो हिंदुस्तान सुख में नहीं रहेगा। सरकारी कानूनों में जो भी छूटछाट मिलते हैं उनका लाभ उठाने का व्यापारी सोचते हैं। इस तरह व्यापारी और सरकार दोनों के बीच अरस की लड़ाई चलेगी और इन दोनों की लड़ाई के बीच देहात के लोग मारे जायेंगे। जरूरी इस बात की है कि व्यापारियों की ताकत देहात के हित में लगे, सरकार की ताकत देहात के हित में लगे और शहरियों की भी ताकत देहात के हित में लगे। और देहाती लोग, शहर के लोग, व्यापारी और सरकार चारों मिलकर परदेशी वस्तुओं का और विचारों का जो आक्रमण हो रहा है उसके विरोध में खड़े हो जाँय।

सर्वोदय का लक्ष्य

तो स्वराज्य के बाद सर्वोदय का क्या काम है यह मैंने थोड़े में आपको समझाया। हमारे देश में चार शक्तियाँ काम कर रही हैं। एक है सरकार की, दूसरी है व्यापारियों की, तीसरी है शहरियों की और चौथी है देहातियों की। इन सब शक्तियों का योग साध्य करना सर्वोदय का काम है। अब आप ही सोचिये कि सर्वोदय में इतना अर्थ भरा है तो इसमें [illegible] और किस तरह [illegible] है और [illegible] की [illegible] नहीं है

लेकिन सारे राजकीय पक्षों को पेट में निगलने के लिये वह पैदा हुआ है। दूसरी भाषा में सबका हृदय एक बनाना, सबकी भावना एक बनाना, और सबकी शक्तियों का समवाय सिद्ध करना सर्वोदय का लक्ष्य है।

भाइयो, मैं आशा करता हूं कि यहां का हरेक जवान और प्रौढ़ इस शब्द से स्फूर्ति पावेगा और इसके लिये जीवन भर कोशिश करेगा। इस शब्द से जो स्फूर्ति मिलती है वह राम-नाम जैसी शक्ति है। और राम वही है जो सबके हृदय में रम रहा है। उसी का भजन अब हम सब मिल कर करेंगे।

निर्मल, (जि० आदिलाबाद)
२२-३-५१

आती। भगवान हर गांव में बूंद बूंद बारिश बरसाता है। उसी तरह घर घर में और गांव गांव में लक्ष्मी निर्माण करने की शक्ति चरखे में पड़ी है। चरखा धन थोड़ा देता है जैसे बारिश की बूंद भी छोटी होती है। लेकिन बारिश की बूंद छोटी होते हुए भी घर घर बरसती है वैसे ही चरखे का धन थोड़ा होने पर भी घर घर निर्माण होता है। यह जब सोचते हैं तो आप को मालूम हो जायगा कि अपने गांव की रक्षा कैसे हो सकती है।

हमारे यहां पहले से वर्ण-धर्म चला आया है। वर्ण-धर्म का अर्थ यह है कि अगर बाप चमार है तो लड़के को भी चमार का धंधा करना चाहिये। लेकिन अगर हम अपने गांव के चमार का माल नहीं खरीदेंगे और बाहर का खरीदेंगे वैसे ही अपने बुनकर का कपड़ा न खरीद कर बाहरवालों का कपड़ा खरीदेंगे तो चमार का लड़का चमड़े का काम करेगा कैसे? और बुनकर का लड़का बुनकर का काम आगे चलायेगा कैसे?

गांव का शिक्षण ब्राह्मण संभालें

इस गांव में ब्राह्मण भी रहते हैं। ब्राह्मण विद्वान होते हैं। और देहातों में अकसर नहीं रहते। मैं अभी छोटे छोटे देहातों से होता हुआ आया हूं। मैंने कहीं ब्राह्मणों के घर नहीं देखे। छोटा गांव होने हुए भी यहां ब्राह्मण हैं क्योंकि यह क्षेत्र का गांव है। लेकिन यहां ब्राह्मणों के होते हुए भी यहां के लोग शिक्षित नहीं हैं। यहां के लोग मुझे आज सबेरे कहते थे कि यहां एक मदरसा खोलने के लिये [illegible]

...ल सकती है ! और पैसा भी कहां से ला सकेगी ! इस
...अगर ब्राह्मण रहते हैं तो वहां के बालकों को वे मुफ्त क्यों
...ढ़ाते हैं ! ब्राह्मण लोग रोज एक घंटा पढ़ायेंगे तो पाँच-सात
... में सारा गाँव लिखना-पढ़ना सीख जायगा । मदरसा-
...ने तो वहां बच्चों को रोज पांच छः-घंटे पढ़ना
...। और इतना समय गरीबों के बच्चे निकाल नहीं सकेंगे ।
...लिये मैंने ब्राह्मणों से कहा है कि वे सिर्फ एक घंटा पढ़ायें और
...च्चे भी एक घंटा सीखें । कुछ लोग शाम को एक घंटा पढ़ायेंगे
...कुछ लोग सुबह एक घंटा पढ़ायेंगे । पढ़नेवाले बाकी के समय
...करेंगे और पढ़ाने वाले भी काम करेंगे । अगर इस तरह ब्राह्मण
...शुल्क विद्यादान करेगा तो उसकी प्रतिष्ठा कायम रहेगी ।
...न ब्राह्मण बन गये लोभी और फिर भी प्रतिष्ठा कायम रखना
...ते हैं । लोभ और प्रतिष्ठा दोनों साथ नहीं रहेंगे । इसलिये मैंने
...णों से कहा है कि वे विद्यादान करें ।

...र्णाश्रम धर्म कैसे टिकेगा !

ये सारे ब्राह्मण वर्णाश्रमाभिमानी होते हैं । लेकिन उनके
बदन पर मिल के ही कपड़े हैं । अब मैं उनसे पूछूंगा कि भाई
आप अगर वर्णाश्रम का अभिमान रखते हैं तो गाँव के बुनकर का
... नहीं पहनते हैं ! अगर वे जूते पहनते हैं तो गाँव के
[illegible]

तरह वर्ण-धर्म कायम रखने में मदद करो। ऐसा करोगे तो गोदावरी के तट का यह गाँव फिर से भाग्यशाली और सही माने में सुवर्णपुर बनेगा।

इस गाँव के बहुत से लोग बाहर गये हैं। उन्होंने बाहर अपनी पढ़ाई की है। लेकिन वे अपने इस गाँव की क्या सेवा कर रहे हैं? उनका का काम है कि अपने गाँव का जो ऋण उन पर है वह चुकावें और उसके लिये गाँव की सेवा में लग जायं।

सबसे समान व्यवहार करो

अंत में एक बात और। यह क्षेत्र है। क्षेत्र में ब्राह्मण ऊंचे माने जाते हैं और हरिजन नीच माने जाते हैं। मुझसे कहा गया है कि मैं इस बारे में कुछ कहूं। लेकिन इस बारे में आप मुझसे मत पूछिये। इस गोदावरी नदी को ही पूछिये। क्या यह गोदावरी ब्राह्मण को पानी पिलाती है और हरिजन को नहीं पिलाती? तो जैसे गोदावरी सब के साथ समान व्यवहार करती है और यह सूर्य सब को समान भाव से प्रकाश देता है वैसे सबके साथ समान भाव से व्यवहार करना ही धर्म है। यह ऊंचा वह नीचा कहने वाले धर्म का आचरण नहीं करते। इसलिए इस क्षेत्र में किसी तरह का भेद-भाव होना ही नहीं चाहिये। दुनिया में दो ही जातियां हैं। एक सज्जनों की और दुर्जनों की। अच्छा बरताव करनेवाला चाडाल [illegible] ब्राह्मण से बढ़कर है और बुरा बरताव करनेवाला ब्राह्मण भी नीचे [illegible] बनता है।

तो मेरे भाइयो, मुझे जो कहना था मैं कह चुका। मैं एक दफा आपके गाँव में आया। फिर कब आऊंगा कौन जाने ! हम लोग सर्वोदय यात्रा के लिये निकले हैं। जैसे यह गोदावरी आप के गाँव से होकर गुजरती है वैसे हमारी यात्रा भी सहज ही यहां आ गई है। तो आप से मेरी प्रार्थना है कि इस क्षेत्र को सच्चे अर्थ में क्षेत्र बनाओ। यहां के हर मनुष्य को पढ़ना-लिखना आना चाहिये एक बात, और यहां जो चीजें बनती हैं उन्हीं को आप को खरीदना चाहिये यह दूसरी बात। एक ज्ञान की है और दूसरी प्रेम की। ये दो बातें आप ध्यान में रखियेगा। मेरा आप को प्रणाम।

सोन अर्थात् सुवर्णपुर, (जि० आदिलाबाद)
२३-२-५१

सत्रहवाँ दिन—

: २१ :

गाँव गोकुल बने

मुझे बहुत आनन्द होता है कि आप इतनी बहनें और भाई दूर दूर के गाँव से हम लोगों से मिलने के लिये आ गये हैं। अभी दो तीन साल के पहले आपका यह हैदराबाद का राज्य बड़ा दुखी था। रजाकार लोगों का जुल्म चल रहा था और आप सब लोग भयभीत थे। कोई कुछ कर नहीं सकता था। लेकिन रजाकारों की सल्तनत खतम हुई और आप लोग अब आजादी से इकट्ठे हुए हैं। नहीं तो ऐसी सभाओं में कौन आ सकता था?

आजादी का मतलब

लेकिन आजादी का यह मतलब नहीं है कि आप बिना [illegible] हाथ पर हाथ दिये बैठे [illegible]

सारा गाँव एक कुटुम्ब बने

और एक बात आप को कहनी है। हरेक गाँव में अलग अलग पार्टियाँ होती हैं। उससे गाँव में झगड़े होते हैं। लेकिन सारा गाँव एक कुटुंब के जैसा होना चाहिये। कोई आपसे पूछे कि क्या आप काँग्रेसवाले हैं या कम्युनिस्ट हैं या समाजवादी हैं, तो जवाब देना चाहिये कि हम हमारे गाँव के हैं और उस गाँव की सेवा यही हमारा धर्म है। भगवान श्रीकृष्ण के गोकुल में सारा गोकुल एक कुटुंब बन गया था उस तरह आप का गाँव गोकुल बनना चाहिये। इस तरह अपने गाँववालों पर प्रेम करना सीखो तो सारा गाँव भगवान का निवास-स्थान बन जायगा।

झुकें नहीं, नम्रता रखें

आखिर में एक बात। आप लोग नमस्कार करने के लिये आते हैं और पाँव पर सिर झुकाते हैं। आप लोगों को खड़े रह कर ही नमस्कार करना चाहिये। हमको सीखना चाहिये कि हम किसी के आगे इस तरह अपना सिर झुकायेंगे नहीं। हमारा आदर और प्रेम हमको प्रकट करना है तो दोनों हाथ जोड़ कर नम्रता से सिर झुका कर खड़े खड़े ही नमस्कार करना चाहिये। पैर तक सिर नहीं झुकाना चाहिये। मैं आप सब को प्रणाम करता हूँ।

बाचेगोंडी, (जिला निजामाबाद)
२८-[illegible]

है ? लोगों का भय तो जैसा का वैसा ही है। आज भी पु
डंडा चलायेगी तो लोग डरेंगे। परकीय सत्ता इसलिये होती है
लोगों में भय होता है। अगर वह भय कायम है तो स्वराज्य अ
कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता इसलिये होती है कि लोग
आपस आपस में एकता नहीं होती। अगर लोगों में आज भी ए
नहीं है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता
लिए होती है कि लोग शराबी होते हैं, व्यसनी होते हैं, पराक्रम
होते हैं। अगर आज भी लोग शराबी हैं, व्यसनी हैं, और परा
हीन हैं, तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? लोगों में पर
सत्ता इसलिए होती है कि लोग आलसी हैं। अगर आज भी
आलसी हैं तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? इसलिए
आश्चर्य नहीं होता कि आप लोगों की स्थिति पहले थी वैसी ही
आज है। अगर मुझे कोई कहेगा कि कल रात थी और आज दिन
हो गया है फिर भी प्रकाश नहीं है, तो मैं कहूंगा कि दिन नहीं
हुआ है बल्कि छोटी सी लालटेन लगी हुई है। तो यही समझो कि
पुलिस ॲक्शन के पहले रात थी, और आज भी रात है, लेकिन जरासी
लालटेन लग गयी। लेकिन उतने लालटेन से दिन नहीं होता है।
दिन के लिये तो सूर्य का प्रकाश चाहिये जो हर घर में पहुँचता है।

स्वराज्य का अर्थ

आप के इस गाँव में १२ हजार [illegible] रहते हैं, लेकिन यहां
आपस आपस में सहकार्य से [illegible] है ? क्या
गाँव [illegible] चलता [illegible]
[illegible] नहीं

हरेक को दो भाषाओं का ज्ञान हो

अब दूसरी बात जो आज मुझे सूझ रही है वह मैं कहता हूं। हमारी विधान सभा ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार किया है। इसलिये अब हरेक को राष्ट्रभाषा का उत्तम अभ्यास करना चाहिये। मैंने तो यह उपमा दी है कि जैसे मनुष्य को दो आंखें होती है वैसे हरेक हिंदुस्तानी को दो भाषाओं का ज्ञान होना चाहिये, एक अपनी मातृभाषा और दूसरी राष्ट्रभाषा। मेरा तर्जुमा करने के लिये जो यहां खड़े हैं उन्होंने हिंदी भाषा का अच्छा अभ्यास नहीं किया है। तो हो यह रहा है कि आपके लिये जो विचार मैं भेजता हूं उसमें से कुछ आपके पास पहुंचते हैं और कुछ बीच में खतम हो जाते हैं। यह आज का अनुभव ध्यान में लीजिये और जल्दी से जल्दी राष्ट्रभाषा का अध्ययन सब कर लीजिये।

बड़े राष्ट्र की जिम्मेवारी

इन दिनों छोटे-छोटे राष्ट्र टिकते नहीं हैं। हिंदुस्तान जैसा बड़ा देश ही टिक सकता है। पुराने जमाने में छोटे छोटे राष्ट्र टिकते थे। लेकिन आज जमाना दूसरा आया है। आज बड़े राष्ट्र ही टिक सकते हैं। और आगे तो हम ऐसा स्वप्न देखते हैं कि सारी दुनिया मिल करके एक ही राज्य बन जाय।

तो यह सब ध्यान में लेकर हरेक नागरिक का कर्तव्य है कि भारत की कोई भी एक भाषा और अपनी मातृभाषा अच्छी तरह सीखे। सारे भारत को एक मानना है तो यह जिम्मेवारी उठानी ही चाहिये।

उन्नीसवां दिन—

: २३ :

हमारे पाप

आज मुझे इस बात की खुशी है कि मैं हिंदुस्तानी में ही बोलूंगा और आप मेरे व्याख्यान को समझ लेंगे। नहीं तो अकसर मेरे वाक्यों का तर्जुमा करना पड़ता था तेलगु में, जिसमें भाषण का बहुतसा सार मैं खो बैठता था। लेकिन यह बात आज नहीं होगी और मेरी आवाज सीधी आपके कानों तक और मैं उम्मीद करता हूं कि हृदय तक, पहुंचेगी।

अभी आप लोगों को सुनाया गया कि हम वर्धा से पैदल-यात्रा के लिये निकल पड़े हैं। शिवरामपल्ली में सर्वोदय संमेलन होने जा रहा है, वहां जा रहे हैं। वैसे रास्ते में तो आप का गांव नहीं आता है, थोड़ा बाजू में है। इसलिये यहां आने का मैंने नहीं सोचा था। लेकिन आपके गांववाले पहुंच गये। उन्होंने बहुत आग्रह किया तो मैं पिघल गया। और आप लोगों के दर्शन करने के लिये आरमूर से आज १७ मील चल कर पहुंच गया हूं।

[illegible]

देहातों में अकसर जाना नहीं होता है वहां जा कर वहां की स्थिति देखूँ। तो आप का गाँव वैसे छोटा भी नहीं था और रास्ते पर भी नहीं था। दोनों लिहाज से यहां आने का मुझे कोई आकर्षण नहीं था। फिर भी आप लोगों के प्रतिनिधियों ने आपका प्रेम मुझे पहुंचाया वह मुझे यहां खींच लाया है। छोटे देहात में जाना होता है तो घंटा डेढ़ घंटा उस गाँव में मैं घूम लेता हूँ। मेरे कार्यक्रम में यह भी एक चीज है। बहुत सारे घरों में जाता हूं; वहां की बहनों से बातचीत करने का मौका मिलता है। इस तरह काफी प्रेमभाव महसूस होता है। मेरे और गाँववालों के बीच कोई परदा नहीं रहता।

शहर की व्याख्या

अब यह बात शहरों में तो नहीं होती। शहर में यह अपेक्षा भी नहीं होती कि सब से परिचय हो। इतना ही नहीं बल्कि मैंने तो शहर की व्याख्या ही यह की है कि शहर वह है जहां मनुष्य अपने पड़ोसी को नहीं पहचानता। अगर आप से पूछा जाय कि आपके पड़ोसी कौन हैं और वे क्या करते हैं, और अगर उसका जवाब मुझे [illegible] मिले कि [illegible] तो आप इस अमल नागरिक हैं ही नहीं। आप [illegible] के रहनेवाले हैं। शहर तो वह है जहां एक दूसरे को पहचानता नहीं, न दूसरे की परवाह नहीं, और जहां प्रेम का [illegible] नहीं [illegible]। हरेक अपने अपने में मग्न है। [illegible] किसी से मिलना आता तो अपनी गरज से। [illegible] रहते हैं उनके बीच में कोई संबंध

है। हम लोगों को आश्चर्य होगा कि वह उपनिषद का ऋषि इल्म की आशा ही शहर में नहीं करता है। और इधर देखो तो जो भी विद्यालय, हाईस्कूल या कॉलेज आदि खुले हैं सारे शहरोंमें हैं। मानो सरस्वतीदेवी ने अपने कमलासन को छोड़ कर नगर में ही आसन डाला है। लेकिन उस जमाने में यह बात जितनी सही थी उससे भी आज वह ज्यादा सही है कि शहर में कोई विद्या नहीं है।

शहरों में विद्या का लय

मैं तो बहुत दफा कह चुका हूं कि शहरों में विद्यालय तो बहुत खुले हैं लेकिन वहां विद्या का लय होता है, विद्या का आलय वह नहीं है। आजकल के विद्यालयों में जो विद्या पढ़ाई जाती है वह बिलकुल ही बेकार है। नागरिकों से जो कुछ आशा करनी है उसके लायक विद्या हाईस्कूल, कालिजों में होनी चाहिये, वह वहां मौजूद नहीं है तो वह विद्या किस काम की ? आज कल जो विद्या चलती है वह हमारे काम की नहीं है, उसमें फौरन परिवर्तन होना चाहिये, यूं कहते कहते सरदार वल्लभभाई पटेल चले गये। और मैंने तो कई दफा कहा है कि भाई इस तरह की विद्या होने के बजाय न होना बेहतर है। अगर नये ढंग के विद्यालय शुरू करने में देरी लगती [illegible] कम से कम पुरानी विद्या तो बंद कर [illegible] चार [illegible] महीने [illegible] छुट्टी दे दो, [illegible] नुकसान नहीं होगा। [illegible] चलता है उसमें भी [illegible] मौसिम में

लगातार दो-दो महीने छुट्टी होती है जब कि किसान धूप में अपने खेत पर काम करता है। लेकिन हम मकानों में बैठ कर विद्या का आदान-प्रदान नहीं कर सकते! इस तरह साल भर में चार-छः महीने छुट्टी लेते हैं और बारह-बारह पंद्रह-पंद्रह साल सीखते रहते हैं। बच्चों पर उनके मां-बाप तालीम के लिये पैसा खर्च करते हैं। और बच्चे बिना काम किये जिंदगी कैसे बसर हो इसकी खोज में रहते हैं। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। जो विद्या उन्हें मिलती है वह निर्वीर्य है। तो बच्चों के शरीर भी नाजुक बनते हैं। कोई रूहानी याने आत्मिक ताकत मिलती नहीं है, काम की आदत पड़ती नहीं और कोई दस्तकारी सिखाई जाती नहीं। जो उठता है उपदेश देता है कि देश की पैदावार बढ़ाने की आवश्यकता है, और हरेक [illegible] है [illegible] इस तरह [illegible]

स्तर चाहिये वैसा बनेगा उसके बाद अपने अपने वादों के लिये अवकाश रहेगा। तब तक वादों को छोडो और सारे लोगों की सेवा में लग जाओ।

लोगों की सेवा कैसे होगी

और सेवा व्याख्यान श्रवणादि से नहीं बल्कि प्रत्यक्ष शरीर-परिश्रम से होगी। आज हिंदुस्तान के हरेक नागरिक से, और ग्रामीण से, चाहे वह पुरुष, स्त्री, बच्चा, बूढा कोई भी हो, यह आशा की जाती है कि उस मे जो भी प्रयत्न बन सकेगा अपनी मातृभूमि के लिये उसे करना चाहिये। अगर यह नहीं होता है तो हमारे देश की समस्या हल नहीं होगी। लोग मुझे पूछते हैं कि सर्वोदय क्या है? मैं कई तरह के अर्थ समझाता हू। एक अर्थ यह भी समझाता हू कि सर्वोदय याने सब का प्रयत्न। एक बच्चा भी ऐसा नहीं रहना चाहिये कि जिसने देश के लिये कुछ न कुछ काम नहीं किया है। इसीलिये गांधीजी ने हरेक को दीक्षा दी कि सूत कातो। और भी दूसरे काम करो। लेकिन कोई इतना कमजोर है कि दूसरा कुछ काम नहीं कर सकता तो वह भी थोडा सूत [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] प्रयत्न
[illegible] यज्ञ

करने की प्रेरणा होनी चाहिये। इस तरह एक दूसरे को एक दूसरे की मदद करने की प्रेरणा क्यों नहीं होनी चाहिये ? ऐसी प्रेरणा यदि होती है तो यह सारा भेद मिट जायगा और सारे मिल-कर हिंदुस्तान की सेवा में लग जायेंगे। भगवान ने हरेक को अलग अलग शक्ति दी है। इस तरह की विषमता दुनियाँ में है इसमें दोष नहीं बल्कि लाभ है। अगर संगीत में केवल 'सा' 'सा' 'सा' ऐसा एक ही स्वर होता, 'ग' 'म' आदि कुछ नहीं होते तो संगीत ही नहीं बनता। लेकिन भिन्न-भिन्न स्वर होते हुये भी हरेक में भिन्न भिन्न गुण हैं इसलिये मधुरता होती है और सब मिल कर सुंदर संगीत बनता है। वैसे शहरवालों में कुछ शक्तियाँ पड़ी हैं, लेकिन वे सारी एक दूसरे के खिलाफ काम करती हैं तो उन शक्तियों का जोड़ नहीं होता बल्कि घटती ही होती है। दस के विरोध में अगर आठ खड़े होते हैं तो दोनों मिल कर दो ही शक्ति रह जाती है। लेकिन दस के साथ अगर आठ लगते हैं तो शक्ति अठारह बनती है। यह सीधे गणित की बात है। तो हमारे देश में शक्ति काफी पड़ी है। लेकिन उस शक्ति का [illegible] हम देख रहे हैं [illegible] यह सारी एक [illegible] [illegible] [illegible] और है [illegible] बनता है। लेकिन [illegible] अगर [illegible] उन [illegible] [illegible] [illegible] यह [illegible] सारा [illegible] [illegible] [illegible] आयगा। [illegible] महान उत्साह [illegible] [illegible] ऐसा हममें [illegible] कम नहीं है।

चल रही है। इधर इस मुल्क में तो लोग शराब खूब पीते दीखते हैं। सब को शराबखोरी से मुक्त करना हमारा काम है। मतलब यह कि जिधर देखो उधर सेवा का काम पड़ा ही है। इसलिये सेवा में फौरन लग जाना चाहिये। कॉंग्रेसवालों को और दूसरे जो सेवक हैं उनको भी।

शराब के विरुद्ध प्रचार की आवश्यकता

पुराने जमाने में कॉंग्रेस पिकेटिंग द्वारा शराब के विरुद्ध प्रचार करती थी। अब तो कॉंग्रेस का ही राज्य है, लेकिन सरकार को लगता है कि शराबबंदी से सरकार की आमदनी बंद होगी और लोग तो छिप छिप कर चोरी से शराब पीते ही रहेंगे। इसलिये कार्यकर्ताओं का काम है कि चित्रों और व्याख्यानों के जरिये शराब की बुराइयों को लोगों के सामने रखें। जब ऐसे प्रचार से वातावरण तैयार हो जायगा तो गाँव गाँव में प्रस्ताव पास करके सरकार को शराबबंदी के लिये कानून बनाने की बात हम कह सकते हैं। याने इस ज्ञान-प्रचार द्वारा और उधर कानून द्वारा यह काम करना होगा।

जो व्यसन लोगों में सालों से घुसा हुआ है उसे निकालने में तकलीफ तो होगी। लेकिन यह बात भी सही है कि हमारे मोर देश में वातावरण शराबखोरी के लिये अनुकूल नहीं है, प्रतिकूल है। यद्यपि सब लोग इसके विरोध में है फिर भी कुछ जातियां, जैसे हरिजन आदि, शराब अधिक पीते हैं। इसलिये केवल कानून से यह काम होगा, ऐसा नहीं मानना चाहिये। हम सेवा का प्रचार भी

कार्य करना चाहिये। और ये जो प्रचारक होंगे वे केवल प्रचारक नहीं होंगे बल्कि गांवों की विविध सेवा करनेवाले पुराने सेवक होंगे। अगर वे ऐसा करेंगे तो आप को यहां कम्युनिज्म का जो डर लगता है उसको भी वे रोक सकेंगे। क्योंकि आखिर कम्युनिस्टों का जो हिंसक तरीका है वह हमारे देश को कभी पसंद नहीं आ सकता। फिर भी क्योंकि देश में गरीबी है, लोग उनकी बात मान लेते हैं। अगर हम लोग देहातों में जायं और उनकी सेवा में लग जायं तो उन्हें महसूस होगा कि कांग्रेसवाले हमारी सेवा में लग गये हैं। इस दृष्टि से सेवा के बारे में यह डिचपल्ली का दवाखाना हमें गुरुरूप बना है। दूर दूर से अंग्रेज लोग आते हैं और हमारी सेवा करते हैं यह क्या हमारे लिये शरम की बात नहीं है! कांग्रेस-वाले अगर आइंदा इस तरह सेवा के काम में नहीं जुट जायेंगे तो कांग्रेस खतम होगी। यह तो मैंने सेवकों के लिये कहा। किंतु गांववालों को भी चाहिये कि वे भी खुद अपनी सेवा करें।

सज्जनों का समाज

लोग यह नहीं कह सकते कि हमारे यहां सेवक नहीं हैं। जंगल के जानवर भी शेर आदि हिंसक पशुओं से बचने के लिये आपस में झुंड बना कर रहते हैं, और एक दूसरे की मदद करते हैं। आप लोग तो आखिर मनुष्य हैं। अगर आप प्रेम से रहेंगे और एक दूसरे की मदद करेंगे तो गांव की रक्षा सहज कर सकते हैं। जैसे हम अपने परिवार की सोचते हैं वैसा सारे गांव की भी सोचने की आदत डालनी चाहिये। लेकिन अपने परिवार के बाहर ह

आते थे तो उनको भी वे देहात में घसीट लाते थे। उन्होंने हमें सिखाया कि हिंदुस्तान के गरीब लोग गाँवों में रहते हैं तो उनकी सेवा के लिये गाँवों में जाओ। उनकी आज्ञा और शिक्षण के मुताबिक हम लोग भी छोटे छोटे गाँवों में दस-दस पंद्रह-पंद्रह सालों से रहते हैं।

वैकुंठ की व्याख्या

छोटा गांव याने स्वर्गभूमि है। लेकिन स्वर्ग को भी मनुष्य नरक बना सकता है। हम आज सुबह आपका गांव देखने के लिये आये थे। यहां लोगों में प्रेम बहुत देखा। स्वर्ग और वैकुंठ तो प्रेम को ही कहते हैं। जहां प्रेम है वहां वैकुंठ है। मैंने देखा कि आप के इस गांव में प्रेम बहुत है। तो यह एक स्वर्ग हो सकता है। लेकिन उस प्रेम के साथ ज्ञान भी चाहिये, और स्वच्छता भी चाहिये, तब स्वर्ग बनता है। तो जहां प्रेम है, ज्ञान है और स्वच्छता है वहां वैकुंठ आ गया। आपके घरों में तो कुछ स्वच्छता देखी लेकिन गाँव काफी गंदा था। तो सब लोगों को मिल कर रोज कुछ न कुछ गाव की सफाई का काम करना चाहिये। हमारे यहां छोटे छोटे गाँवों में सफाई का काम चलता है। एक रोज पुरुष काम करते हैं, एक रोज स्त्रियां काम करती हैं और एक रोज बच्चे काम करते हैं, इस तरह सफाई का काम बाट लिया गया है। इस तरह आप गाँव साफ करने की तालीम इस गांव को मिल रही है, यह नहीं हो सकता कि आप का गांव साफ करने के लिए [illegible] लेना आ गया। आज कल गांव के [illegible] हो [illegible] करते हैं

वैसे सब गाँववालों को मिल कर अपने गाँव की सफाई करनी चाहिये। जब गाँव स्वच्छ होगा तो अपना हृदय भी स्वच्छ होगा। हमें अगर गन्दी जगह में बैठने की आदत पड़ जाय तो हमारा दिल भी गन्दा बनता है। इसलिये हमारे पूर्वजों ने तालीम दी है कि ध्यान या पूजा करनी है तो पहले जगह साफ कर लो। सफाई के लिये पैसे की भी जरूरत नहीं होती। जरूरत है परिश्रम की। इस तरह अगर गाँव के बड़े लोग, स्त्रियां और छोटे बच्चे सफाई के काम में लग जायें तो अपना गाँव वैकुंठ बन जायगा।

गाँव की रक्षा गाँव ही करे

मैंने सुना कि इस गाँव में एक साहूकार रहता था। वह डर के मारे गाँव छोड़ कर दूसरे गाँव में रहने गया है। बड़े दुख की बात है कि किसी को गाँव छोड़ कर जाना पड़े। हमारे गाँव का मनुष्य कैसा भी क्यों न हो अपना मनुष्य है। तो हम सबको उसकी रक्षा करनी चाहिये। अगर हमारा किसी से झगड़ा है तो हम उसके साथ प्रेम से झगड़ेंगे। लेकिन उसकी रक्षा तो गाँव में जरूर होगी। किसी के शरीर को जरा भी तकलीफ नहीं पहुंचने देंगे। इस तरह गाँव की रक्षा की जिम्मेवारी हमारी है। जरा कहीं [illegible] तो लोग पुलिस को बुलाते हैं। अब पुलिस गाँव [illegible] वह भी दूसरों की रक्षा करती है। लूटनेवालों ने [illegible] पुलिस आये तो उन्होंने [illegible]

[illegible]

से ही सरकार को पैसा मिलता है। वह पैसा अगर पुलिस पर ही खर्च होगा तो आपके हित के लिये सरकार कुछ नहीं कर सकेगी। आपको सरकार से कहना चाहिये कि हमारे गाँव में पुलिस मत भेजो। हमारी रक्षा करने के लिये हम समर्थ हैं। हमने जवान लोगों की सेना बनाई है। गाँव में अगर कोई दुर्जन भी रहा तो उसका भय नहीं मालूम होना चाहिये। दुर्जन को भी हमें प्रेम से जीतना है। हमारे गाँव का भाई हमारे घर का मनुष्य है। अगर लड़का ठीक बर्ताव नहीं करता है तो क्या माता उसको घर से निकाल देती है? वह तो उसको प्रेम से जीतेगी। उसी तरह गाँव के सब लोगों को हमें प्रेम से सीधे रास्ते पर लाना है। लोग कहते हैं कि दुर्जन पर हम प्रेम करते हैं तो वह और भी दुर्जन बनता है। लेकिन यह ख्याल गलत है। अगर कहीं अंधकार है और उसमें हम दीपक लाते हैं तो क्या अंधकार ज्यादा हो जाता है? इस बात का बहुत अनुभव आ चुका है कि सज्जनता के सामने दुर्जन की बुद्धि भी शुद्ध होती है।

शिक्षण का जिम्मा गाँववाले उठायें

आप के गाँव में एक बहुत अच्छी बात हमने देखी, जो हमारी तरफ उत्तर हिंदुस्तान में नहीं है। किसी देहात में अगर हम सभा करते हैं तो आप के यहाँ स्त्रियाँ भी बहुत आती हैं। लेकिन वहां तो पुरुष ही पुरुष आते हैं। बहुत सी स्त्रियां तो पर्दे में रहती हैं तो सूर्य का दर्शन भी बिचारी को नहीं होता। आप के यहां स्त्री पुरुष दोनों प्रेम से एक जगह आते हैं और ज्ञान सुनते हैं,

यह कहा है । गाड़ी के दो पहिये होते हैं, वैसे संसार की गाड़ी के भी स्त्री और पुरुष ये दो पहिये हैं । दोनों को ज्ञान की अत्यंत आवश्यकता है, और समान आवश्यकता है । लेकिन मैंने सुना है कि कल के गाँव में जो स्कूल चलता है उसमें केवल लड़के ही जाते हैं, लड़कियाँ नहीं जातीं । लेकिन लड़कियों को भी अच्छी तालीम मिलनी चाहिये । मैं जानता हूँ कि गरीब लोगों के लड़के और लड़कियाँ स्कूल में नहीं जा सकतीं, उनको घर में काम रहता है । तो मैं कहता हूँ कि गाँव में एक घंटे की स्कूल चलनी चाहिये । वह स्कूल सरकार नहीं बल्कि गाँव का पढ़ा-लिखा आदमी चलायेगा । उसके लिये पैसे भी नहीं लगेंगे । वह आदमी प्रेम से रात को एक घंटा सिखायेगा और दिन में भी एक घंटा सिखायेगा। अभी गोदावरी के तीर पर सोन नाम का गाँव है वहाँ, मैं गया था । वहाँ के लोगों से मैंने कहा कि प्रेम से एक घंटा सिखाने के लिये तैयार हो जाइये । वहां पर वैसे लोग तैयार हुए और मेरे जाने के बाद एक घंटे की पाठशाला वहां शुरू हो गई है । तो जैसे उस गाँव में हुआ है वैसे आप के गाँव में भी हो सकता है ।

सहकारी दूकान गाँव में होनी चाहिये

मैंने पूछा इस गाँव में दूकानें कितनी हैं । तो कहा गया कि तीन-चार हैं । लेकिन ये दूकानें खानगी हैं । मैं चाहता हूँ कि आप के [illegible] गाँव में सब लोगों की एक दूकान होनी चाहिये । [illegible] सब रुपये [illegible] बनाइये । इस तरह सब के [illegible]

किसी को ठगेगा नहीं। अगर हरेक घर से चार-आठ या दस रुपये मिल जाते हैं तो तीन-चार हजार रुपयों की दूकान हो सकती है। इस तरह की बड़ी दूकान अगर गाँव में चले तो सब को ठीक भाव से माल मिलेगा। एक बच्चा भी उस दूकान पर माल खरीदने जायगा तो उसको ठीक भाव से ही माल मिलेगा। वह दूकान आपके गाँव की होगी। आप सब लोगों का उस पर हक होगा। उसमें अगर कोई लाभ हुआ तो वह भी आप सब लोगों को मिलेगा। मैं जानता हूं कि देहात के लोगों के पास धन कम है। लेकिन जो थोड़ा सा है वह इकट्ठा करेंगे तो बडा काम हो सकता है। देहात में धन कम है लेकिन शरीर-श्रम करने की शक्ति बहुत है। तो उसका उपयोग करो और सब मिल कर गाँव का काम करो इतना ही मुझे कहना है। मेरा आप लोगों को प्रणाम।

कम्मरल, (ज़ि॰ निज़ामाबाद)
२८-५-५१

भगवान विष्णु के चरणोंपर दृष्टि लगाये भावावस्था में लीन हो गये और उनकी आखों से प्रेमाश्रु की अजस्र धार बहने लगी। निर्गुण-सगुण एक हो गये। आधा घंटा ठहर कर विनोबाजी ने अपनी यात्रा आगे चलाई।

तारीख ८ से २३ तक की उनकी यात्रा का वृत्त नीचे दिया गया है।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(१)	८ मार्च	वायगाँव	वर्धा	१३
(२)	९	गलेगाँव	यवतमाल	१७
(३)	१०	सर्जा-कृष्णापुर	,,	१४
(४)	११	रुझा	,,	१०
(५)	१२	पांढरकवडा	,,	१२
(६)	१३	पाटण बोरी	,,	११
(७)	१४	आदिलाबाद	निजामस्टेट, आदिलाबाद	१६
*(८)	१५	कौसल्यापुर	आदिलाबाद	१३
*(९)	१६	माडवी	,,	११
*(१०	१७	नरसडगु		१५
(११)	१८	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]

लोगों ने दस्तखत कर के वचन दिया कि वे मजदूरी में दस छटाक ज्वार देंगे।

सखी-कृष्णपुर जंगल में वसे हुये गाँव हैं। सखी और कृष्णपुर अड़ोस-पड़ोस में हैं। विनोबाजी का मुकाम सखी गाँव में रखा गया था। इस जगह पर पहुँचते समय जंगल में रास्ता भूलने के कारण कुछ घूम कर हम लोग पहुंचे। चार साढ़े चार मील तक बीच में कोई आदमी भी नहीं मिलता था। पथरीला और ऊंचा नीचा रास्ता था। लेकिन जब गाँव में पहुंचे तो श्रमपरिहार हो गया। बीस-पचीस घास के झोंपडे थे। लेकिन आम्र-वृक्षों की घनी छाया के नीचे तंबू में हमारा पडाव रहा इसलिये चित्त प्रसन्न हो गया। गांव के लोगों ने बड़े प्रेम से खिलाया पिलाया।

शाम की प्रार्थना में बहनें अधिक से अधिक आयें इस दृष्टि से महादेवीबाई हर घर में गई और बहनों को प्रार्थना सभा में ले आई। आसपास के गाँवों से भी काफी लोग गाड़ियाँ ले कर पहुंच गये थे। तना छोटा और जगल के बस्ती का गांव होते हुए भी यहां की सभा अच्छी हुई। बहनें कुछ देर से पहुंची। इसलिये उनके लिये विनोबाजी ने ५-१० मिनिट खास दिये।

मेटी खेडा के श्री आनदराव मगेदे नाम के भाई सभा म आये थे। परंधाम के काचनमुक्ति के प्रयोग के बारे में उन्होंने सवाल पूछा। बाद में विनोबाजी से उनका निकट परिचय भी हुआ। विनोबाजी ने इनका नाम सर्वोदय डा[illegible] दिया। ये [illegible] आगे [illegible] में भी [illegible]।

पाटरकवडा में गंगाबिसनजी, राधाकृष्णजी, अनसूया, शांताबाई रानीवाला और ईश्वरभाई यहां आ मिले थे। यवतमाल के डॉक्टर मोरे भी आये। दिल्ली से हिंदुस्तान टाइम्स के संवाददाता श्री कल्हण भी आ पहुंचे। वे दस दिन साथ रह कर निर्मल से वापिस गये। गंगाबिसनजी, राधाकृष्णजी और अनसूया आदिलाबाद तक साथ रहे। शांताबाई रानीवाला मांडवी तक साथ रहीं और वहां से डॉ० मोरे के साथ वापिस वर्धा आ गईं। ईश्वरभाई हैदराबाद तक साथ रहेंगे।

विनोबाजी तीन बातों पर खास ध्यान देते हैं: सुबह पांच बजे कूच करना, रात को नौ बजे सो जाना और दोपहर में ११ बजे भोजन करना। ये तीन बातें नियमित रहें तो बाकी का कार्यक्रम अपने आप नियमित बनता है ऐसा वे कहते रहते हैं। सुबह ५ बजे कूच करने का तो बिल्कुल नियमित चल रहा है। रात को नौ बजे सोने की बात ५-७ रोज के बाद होने लगी। रात को गाड़ी में सारा सामान भर कर तैयार रखना पड़ता है। सुबह सिर्फ बिस्तर बांध कर गाड़ी में रखना बाकी रहता है। दोपहर का खाना ११ और १२ के बीच अक्सर हो जाता है।

अब यात्रा का सारा कार्यक्रम यहां के मुआफिक व्यवस्थित बन गया है। सुबह पांच से दस तक मुसाफिरी का समय रखा था जिसमें नाश्ते आदि के लिये एक पेड़ नीचे रुका था। लेकिन अब मुकाम [illegible] है जिसमें एक [illegible] के अन्दर [illegible]

तर हो जाती है। शाम की प्रार्थना सभा का निश्चित समय नहीं है। छः बजे प्रार्थना हो ऐसी विनोबाजी की इच्छा रही। कुछ रोज वैसा चला भी। लेकिन आदिलाबाद के बाद देखा गया कि आस-पास के देहात से काफी भाई-बहनें सभा और दर्शन के लिये आ जाती हैं। उनको अपने गाँव जल्दी वापिस जाने की सुविधा हो इस दृष्टि से विनोबाजी चार बजे या कभी कभी तीन बजे भी सभा कर लेते हैं।

आदिलाबाद जिले में और खास करके निर्मल तहसील में गंगारेड्डी नाम के कार्यकर्ता ने देहातों में घूम कर काफी प्रचार किया दिखाई दिया। हर गाँव के प्रवेशद्वार पर बहनें आरतियाँ लेकर हाजिर रहती थीं और देहाती बाजे भी रहते थे। निर्मल तहसील के देहातों में चरखे काफी चलते हैं। निरडगोंडी में पहली बार पचीस-तीस चरखे सिर पर ले कर बहनें सूत कातने के लिये विनोबाजी के डेरे पर पहुँच गईं।

गोपालपेठ में तो हद हो गई। सारा गाँव पानी छिड़क कर साफ किया गया था। रांगोली भी आंगन में खींची गई थी। सड़क [illegible]

और विश्राम घर सभी पत्तियों के बने थे। ग्यारह बजे पास के चिचोली गाँव से पचास बहनें सिर पर चरखे ले कर गाने बजाने के साथ आ पहुँचीं। गोपालपेट के पचास-साठ चरखे थे ही। कुल सौ से ऊपर चरखे जमा हो गये। और सारी बहनें कातने लगीं। इतने चरखे थे लेकिन एक चरखे की भी कर्णकटु आवाज नहीं आती थी। टूटन का तो नाम ही नहीं था। चरखे खड़े थे और लकड़ी की धुरा के थे, सिर्फ तकुआ लोहे का था। चमरख मक्कई के भुट्टों के पत्तों का और तकुवे की चिरी अरहर के सूखे पेड़ की। प्रार्थना सभा के बाद सारी बहनों ने अपना काता सूत विनोबाजी को अर्पण किया। करीब साठ गुंडियाँ थीं। वह सूत वहीं चिचोली गाँव में बुनने के लिए दे दिया। हैदराबाद संमेलन में कपड़ा तैयार होकर आ जायगा।

ता० २२ को गोदावरी के तट पर पहुँच गये। गोदावरी के किनारे सुवर्णपुर—जिसे आज सोन कहते हैं—तीर्थ क्षेत्र माना जाता है। सुवर्ण नदी व गोदावरी का यहाँ संगम है।

इस के बाद 'गोदावरी दक्षिण तीरे' हो कर निजामाबाद जिले में प्रवेश किया।

और विश्राम घर सभी पल्लवों के बने थे। ग्यारह बजे पास के चिचोली गाँव से पचास बहनें सिर पर चरखे ले कर गाने बजाने के साथ आ पहुँचीं। गोपालपेठ के पचास-साठ चरखे थे ही। कुल सौ से ऊपर चरखे जमा हो गये। और सारी बहनें कातने लगीं। इतने चरखे थे लेकिन एक चरखे की भी कर्णकटु आवाज नहीं आती थी। टूटन का तो नाम ही नहीं था। चरखे खड़े थे और लकड़ी की धुरा के थे, सिर्फ तकुआ लोहे का था। चमगण मकई के भुट्टों के पत्तों का और तकुवे की चिरी अन्दर के सूखे पेड़ की। प्रार्थना सभा के बाद सारी बहनों ने अपना कता सूत विनोबाजी को अर्पण किया। करीब साठ गुंडियाँ थीं। वह सूत वहीं चिचोली गाँव में बुनने के लिए दे दिया। हैदराबाद संमेलन में कपड़ा तैयार होकर आ जायगा।

ता० २३ को गोदावरी के तट पर पहुंच गये। गोदावरी के किनारे सुवर्णपुर—जिसे आज सोन कहते हैं—पवित्र क्षेत्र माना जाता है। सुवर्ण नदी व गोदावरी का यहां संगम है।

इस के बाद गोदावरी [illegible] निजामा-बाद जिले में प्रवेश किया

[illegible]

(२८)	४	हैदराबाद	,,	८
(२९)	५	शिवरामपल्ली	,,	५

आज तक कुल मील ३३९.

निजामाबाद और आरमूर में सायंप्रार्थना के बाद स्थानीक कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा का अच्छा कार्यक्रम हुआ।

बालकोंडा में मेटपल्ली के चरखा संघ के आठ-दस कार्यकर्ता पैदल आ कर विनोबाजी से मिले। आरमूर तक वे विनोबाजी के साथ रहे। और वहां से २२ मील फिर पैदल चल कर वापिस गये।

हैदराबाद स्टेट के चंद बड़े शहरों में निजामाबाद एक बड़ा शहर है। यहां तेलुगु में प्रवचनों का अनुवाद नहीं करना पड़ा और श्रोतागण भी मध्यम श्रेणी के थे। इसलिए विनोबाजी का यह प्रवचन काफी विस्तार से हुआ।

कामारेड्डी से हैदराबाद केवल ७२ मील है।

इस तरफ के देहातों में खास बात यह देखी गई कि सभा में करीब आधी संख्या स्त्रियों की होती है। और सब भाषण बड़ी शांति से सुनती हैं।

विनोबाजी का साहित्य हिंदी-मराठी में अच्छी मात्रा में बिकता गया। इस बिक्री की खास बात यह है कि केवल किसी